30.00

February 2012

मरयम

घर को भर दो मोहब्बत से

मेज़बानी

हॉई-ब्लड प्रेशर

सिर्फ़ ख़ुदा था...

डर की रात

जो कभी न बुझे वह चिराग़

क्या क़ुरआन में सब कुछ है?

फ़ैसला

क्या आप जानती हैं?

ग़िज़ा और सेहत

इंतेज़ार

Turn Page for Gift Coupon 7

मरयम

का एक साल पूरा होने के मौक़े पर हम अपने
सब्सक्राइबर्स के लिए लेकर आए हैं

ख़ुशियों की सौग़ात

और शुरू कर रहे हैं

एक स्कीम जिसमें हर महीने 5 ख़ुशनसीबों को मिलेंगे ख़ूबसूरत ज्वैलरी सैट, घर के इस्तेमाल के सामान और भी बहुत कुछ...

बस पढ़ती रहिए मरयम मैगज़ीन और इंतेज़ार कीजिए अपनी बारी का।

**इस महीने जिन 5 ख़ुशनसीबों को
मरयम की तरफ़ से ख़ूबसूरत तोहफ़े दिये जा रहे हैं
उनके नाम यह हैं:**

Mr. Mohd. Alam, Jaunpur
Subscription ID: A00213

Mr. S A H Rizvi, Luckow
Subscription ID: A00046

Mr. Faizan, Lucknow
Subscription ID: A00038

Mr. Naqi Haider Rizvi, Chapra
Subscription ID: A00007

Mr. Urusa Shakil Khan, Lucknow
Subscription ID: A00570

February 2012

Monthly Magazine

मरयम

इस महीने आप पढ़ेंगी...

घर को भर दो मोहब्बत से	6
क्या कुरआन में सब कुछ है?	9
ग़िज़ा और सेहत	11
इमाम हसन असकरी[अ0]	13
मेज़बानी	14
चाय (डिश)	16
परवरिश में कमी...	17
जीने का मक़सद	19
इंतेज़ार	22
क्या आप जानती हैं?	24
जो कभी न बुझे वह चिराग़	26
फ़ैसला (नज़्म)	28
2 क़दम, 2 घूंट, 2 बूंद	29
हॉई-ब्लड प्रेशर	31
सिर्फ़ ख़ुदा था...	32
ज़ुलक़रनैन कौन थे?	34
इक्वुआलिटी यस, सिमिलॉरिटी नो	37
डर की रात	39
तवक्कुलः ख़ुदा पर भरोसा	40
मोमिन	42

हम आप सब को
रसूले इस्लाम[स0] और इमाम जाफ़र सादिक़[अ0]
की विलादत की मुबारकबाद पेश करते हैं।

Editor
M. Hasan Naqvi

Editorial Board
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Fasahat Husain

Assist. Exec. Editor
M. Aqeel Zaidi

Contributors
Imtiyaz Abbas Rizwan
Azmi Rizvi
Batool Azra Fatima
M. Mohsin Zaidi
Tauseef Qambar

Graphic Designer
imagine graffix Siraj Abidi
9839099435

Typist
S. Sufyan Ahmad

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprieter S. Mohammad Hasan Naqvi printed at Swastika Printwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and published from 234/22 Thavai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017 (Lucknow), +91-9892393414 (Mumbai)
Email: maryammonthly@gmail.com

17
Rabi-ul-Awwal
جعفر محمد الصادق

घर को भर दो मोहब्बत से

उज़मा नक़वी

शादी वह रिश्ता है जिसके ज़रिए ग़ैर अपने हो जाते हैं, यह नहीं होता कि अपने ग़ैर हो जाएं मगर कभी-कभी ऐसा भी देखने में आता है कि नए रिश्तों के बाद पुराने रिश्तों में तनाव पैदा होने लगता है। यह शुरु में तो एक हल्की सी नाराज़गी होती है मगर आहिस्ता-आहिस्ता तनाव से अलगाव में बदल जाती है।

इन्सान मोहब्बतों के ख़ज़ाने का नाम है। किसी की मोहब्बत दूसरों की मोहब्बत को कम नहीं किया करती। इसलिए यह ग़लत सोच है कि शादी के बाद माँ-बाप से अभी तक लड़का अकेला मोहब्बत करता था लेकिन अब उनकी मोहब्बत के टुकड़े करने के लिए उसकी बीवी भी उसके साथ है।

मगर शादी के बाद कभी-कभी ऐसा नहीं होता है। आइए! यह पता लगाने की कोशिश करें कि ऐसा क्यों नहीं होता है।

अगर इस मसले पर ग़ौर किया जाए तो कुछ ऐसी अहम बातें सामने आती हैं जिनकी वजह से यह मुश्किल पैदा होती है जिन्हें हम यहां पेश कर रहे हैं:

अपने दिल की बात का न कहना

यह मुश्किल सबसे ज़्यादा ग़लतफ़हमी की वजह से पेश आती है। माँ-बाप को ऐसा लगता है कि शादी के बाद लड़का हम से दूर होता जा रहा है या कभी बीवी को यह लगता है कि मेरा शौहर मुझ से कम और माँ-बाप से ज़्यादा मोहब्बत करता है।

और यह भी बिल्कुल सही है कि अगर किसी की शख़सियत को किसी ख़ास एंग्ल से देखा जाए तो उसमें वही दिखता है जो देखने वाले के ज़हन में होता है। अगर देखने वाले के ज़हन में कोई अच्छाई हो तो उसमें अच्छाइयाँ दिखती हैं और अगर कोई बुरी चीज़ हो तो उसमें बुराइयाँ दिखती हैं।

मैं आपके सामने अपनी ज़िंदगी का एक तर्जुबा बताती हूं। मैं एक ऐसे शख़्स को जानती हूं जो बहुत ही मज़हबी, परहेज़गार, मुत्तक़ी और दीनदार है। उसकी एक प्रॉब्लम यह है कि कभी-कभी वह बैठे-बैठे सो जाता है। एक बार कुछ नए लोगों के बीच में वह बैठा था और उसे नींद आ गई जिसकी वजह से वह झूमने लगा। उन नए लोगों में से किसी ने पूछा कि इसे क्या हुआ तो उसके किसी दोस्त ने कह दिया कि कुछ नहीं, कभी-कभी थोड़ी सी (शराब) पी लेता है।

अब उस मेहमान को तो उस बेचारे की दीनदारी का पता था नहीं। वह उसको एक शराबी के एंग्ल से देखने लगा और उसमें उसको शराबी की सारी सिफ़तें

A family's Love is forever

नज़र आने लगीं।

क्यों? इसलिए कि वह उसको उसी एंग्ल से देख रहा था।

आपने देखा! अगर ग़लतफ़हमी हो जाए तो एक दीनदार बिना शराब पिए शराबी बन जाता है।

शायद इसीलिए इस्लाम ने 'सूए-ज़न' यानी किसी के काम या बात के ग़लत एंग्ल से देखने से रोका है और हुस्ने ज़न पर बेहद ज़ोर दिया है।

क़ुरआने मजीद में है, "ऐ ईमान वालो! अक्सर गुमानों से परहेज़ करो क्योंकि बाज़ गुमान असल में गुनाह हैं।" (1)

हज़रत अली[अ] फ़रमाते हैं, "बदगुमानी काम ख़राब करती है और लोगों को बुराई पर तैयार करती है।" (2)

इसी तरह अगर माँ-बाप अपने बेटे या बीवी अपने शौहर को किसी ग़लत एंग्ल से देखेगी तो उसमें उसे वह सारी बातें नज़र आने लगेंगी जो असल में उसमें हैं ही नहीं। इस तरह उसका शक यक़ीन में बदलता जाएगा।

इस तरह से आपसी तनाव बढ़ता जाएगा जो धीरे-धीरे अलगाव में बदल जाएगा।

इस से बचने का बस एक ही रास्ता है कि जैसे ही माँ-बाप या बीवी के ज़हन में इस तरह की कोई बात आए सबसे पहले तो वह उस बात की सही वजह तलाश कर अपने ख़याल को दूर झटक दें। अगर फिर भी उनको कुछ समझ में न आए तो उसी वक़्त अपने दिल की बात कह कर कन्फ़र्म कर लें।

क्योंकि अगर वह कन्फ़र्म नहीं करेंगे तो एक के बाद एक ग़लतफ़हमियां बढ़ती जांएगी और यह एक बड़ी मुसीबत बन जाएगी। जिसमें हर पहले वाला वाक़िआ बाद वाले के लिए दलील बनकर उसको और पक्का करता जाएगा।

अगर सोचें तो इसकी वजह ख़ुद आप ही हैं। अगर पहले ही कन्फ़र्म कर लिया जाता तो बात इतनी न बढ़ती। इसलिए दिल की बात कह देने से बात वहीं ख़त्म हो जाती है मगर न कहने से बढ़ती रहती है।

दूसरों का हक़ मारना

हर इंसान पर कुछ उसके माँ-बाप के हक़ होते हैं और कुछ उसकी बीवी के। इंसान की ज़िंदगी की कामयाबी का राज़ ही यही है कि वह दोनों के हक़ों को अदा करे।

कभी-कभी यह देखने में आता है कि बीवी के हक़ को पूरा करने के लिए माँ-बाप पर ज़्यादती की जाती है और कभी माँ-बाप का हक़ पूरा करने के लिए बीवी पर और जिस पर ज़्यादती होती है उसमें ग़ैरियत का एहसास पैदा हो जाता है। यही एहसास धीरे-धीरे भयानक शक्ल बना लेता है कि बाद में जिसका इलाज नामुमकिन है।

इसलिए हर इंसान को यह जानना ज़रूरी है कि उस पर माँ-बाप, भाई-बहन या बीवी वग़ैरा के क्या हक़ हैं और उनको अदा करने की पूरी कोशिश करे।

अगर कभी किसी वजह से किसी के हक़ को अदा न कर पाए तो फ़ौरन उस से माफ़ी मांग कर उसको वजह बता दे ताकि उसके दिल में कोई ग़लत ख़याल पैदा न होने पाए और बात उसी जगह पर ख़त्म हो जाए।

ज़िम्मेदारी का एहसास न होना

कुछ लोग थोड़ा सा ग़ैर ज़िम्मेदार होते हैं और अपनी ज़िम्मेदारियों को या तो समझते ही नहीं या समझते हैं तो पूरा नहीं करते। ऐसे में ग़लती किसी की होती है और दोष किसी को दिया जाता है। ग़लती उनकी होती है जिन्होंने ज़िम्मेदारी का एहसास नहीं किया लेकिन अगर माँ-बाप या भाई-बहन की ज़िम्मेदारी पूरी नहीं हुई तो वह उसकी बीवी से बदज़न हो जाते हैं और अगर बीवी की ज़िम्मेदारी पूरी नहीं हुई तो वह माँ-बाप या भाई-बहन से बदज़न हो जाती है।

ऐसे में हमें चाहिए कि अपनी ज़िम्मेदारियों को समझ कर पूरा करने की कोशिश करें और अगर पूरा न कर पाएं तो अपनी ग़लती को मान लें ताकि दूसरे को दोष न दिया जाए।

दूसरी तरफ़ से बीवी, माँ-बाप या भाई-बहन की भी यह ज़िम्मेदारी है कि वह यह जानने की कोशिश करें कि ग़लती किसकी है ताकि किसी के जुर्म की किसी दूसरे को सज़ा न दी जाए।

मरयम
February 2012
Monthly Coupon
ड्रॉ में शामिल होने के लिए
10 कूपन जमा करके हमें भेजिए।

मोहब्बत के बंट जाने को बर्दाश्त न कर पाना

बेशक किसी भी लड़के से उसके माँ-बाप, भाई-बहन बेहद मोहब्बत करते हैं और उसके जवाब में उससे भी उतनी ही मोहब्बत चाहते हैं। दूसरी तरफ़ जो लड़की शादी करके आई है उसको भी अपने शौहर की मोहब्बत चाहिए।

ऐसे में कभी-कभी माँ-बाप या भाई-बहन को शादी के बाद कुछ ऐसा लगने लगता है कि हमारा लड़का या भाई हम से मोहब्बत कम करने लगा है और अपनी बीवी से ज़्यादा या कभी-कभी बीवी को यह एहसास होने लगता है कि मेरा शौहर मुझ से कम और अपने माँ-बाप या भाई-बहन से ज़्यादा मोहब्बत करता है।

वह बेचारा ज़िंदगी के मोड़ पर अकेला रह जाता है। सच यह है कि वह अपनी बीवी से भी और माँ-बाप या भाई-बहन से भी मोहब्बत करता है और उधर यह भी सच है कि किसी की मोहब्बत से किसी दूसरे की मोहब्बत कम नहीं होती। अगर वह अपनी बीवी से मोहब्बत का इज़हार कर रहा है तो माँ-बाप या भाई-बहन को इस से यह मतलब बिल्कुल नहीं निकालना चाहिए कि उसकी मोहब्बत उन लोगों से कम हो गई और इसी तरह उसका उलटा भी यानी बीवी को भी यह नहीं सोचना चाहिए कि वह उससे कम और अपने माँ-बाप या भाई-बहन से ज़्यादा मोहब्बत करता है।

असल बात यह है कि शादी के बाद अब उसकी ज़िम्मेदारियाँ बढ़ गई हैं और उसको अपनी तमाम ज़िम्मेदारियों को पूरा करना है। इस बात का एहसास घर के सभी लोगों को होना चाहिए बल्कि घर वालों को इस ज़िम्मेदारी को पूरा करने में उसकी मदद भी करनी चाहिए।

अगर कभी किसी दूसरे की मोहब्बत किसी को ख़राब लगती है तो यह असल में जलन और हसद है और हसद के लिए रसूले ख़ुदा[स०] फ़रमाते हैं, ''बेशक हसद ईमान को ऐसे ही खा जाता है जैसे आग लकड़ी को।''

इसलिए यह शैतान का हमला है और ऐसे मौक़े पर फ़ौरन लाहौल पढ़कर ख़ुद को शैतान से बचाना चाहिए वरना यह बीमारी रोज़-बरोज़ बढ़ती जाती है।

दूसरे से मोहब्बत इस बात की दलील नहीं है कि आप से मोहब्बत कम हो गई है क्योंकि मोहब्बत कोई जेब का पैसा नहीं कि अगर दस हज़ार में से पाँच हज़ार बीवी को दे दिए जाएं तो माँ-बाप या भाई-बहन के लिए सिर्फ़ पाँच हज़ार ही बचे बल्कि मोहब्बत वह दौलत है जो ख़र्च करने से बढ़ती है कम नहीं होती।

इसमें होना तो यह चाहिए कि जब बीवी से मोहब्बत के इज़हार की बात आए तो एक हद तक माँ-बाप या भाई-बहन इसमें उसका साथ दें और उसी तरह जब माँ-बाप या भाई-बहन से मोहब्बत का इज़हार करना हो तो बीवी उसका साथ दे।

किसी एक तरफ़ ज़्यादा झुकाव

जिस तरह बीवी और माँ-बाप या भाई-बहन ग़लती करते हैं उसी तरह कभी-कभी ख़ुद शौहर या लड़का भी ग़लती करता है और वह यह कि शादी के बाद उसका किसी एक तरफ़ झुकाव ज़्यादा हो जाता है जिसके नतीजे में बाक़ी लोगों से दूरी हो जाती है। ज़्यादातर होता यह है कि यह झुकाव बीवी की तरफ़ ज़्यादा होता है क्योंकि शादी के बाद लड़का धीरे-धीरे अपने रूटीन को भूलकर बीवी के नाज़-नख़रे उठाने में लग जाता है जिस से माँ-बाप या भाई-बहन की ज़िंदगी पर काफ़ी असर पड़ता है और नतीजे में उनका दिल टूट जाता है। जैसेः

पहले बिना माँ-बाप या भाई-बहन के खाना नहीं खाता था और अब उनको यह भी नहीं पता होता कि कब, कहाँ और क्या खाया।

पहले घर में माँ की शख़्सियत ही सेंट्रल थी और अब हर चीज़ में बीवी की।

पहले कुछ सामान लाता था तो माँ के हाथ में देता था मगर अब सिर्फ़ बीवी के हाथ में।

या बीवी के साथ पूरा वक़्त गुज़ारना जबकि माँ-बाप या भाई-बहन के साथ बिल्कुल नहीं या बहुत कम।

या उनके ख़र्च की बिल्कुल फ़िक्र न करना, वग़ैरा-वग़ैरा

यह सब ज़ाहिर में तो छोटी-छोटी बातें होती हैं मगर घर के माहौल को ख़राब करने में बहुत बड़ा रोल अदा करती हैं।

वैसे कभी-कभी यह भी देखने में आता है कि माँ-बाप या भाई-बहन की तरफ़ झुकाव ज़्यादा होता है और बीवी की तरफ़ कम, हालांकि ऐसा ज़्यादा होता नहीं है।

बहरहाल हर सूरत में लड़के या शौहर का रोल ही सबसे अहम है क्योंकि वही घर का सेंट्रल प्वाइंट है। वह चाहे तो सबको साथ लेकर ज़िंदगी गुज़ारे और अगर चाहे तो अपनी ज़रा सी भी लापरवाही से घर में दरार डाल दे।

इसलिए उसको कुछ बातों का ख़याल रखना चाहिएः

बीवी और मां-बाप के साथ बर्ताव में ज़रा भी फ़र्क़ नहीं करना चाहिए।

बीवी अगर पैरेंट्स के साथ ज़्यादती करती है या पैरेंट्स बीवी के साथ ज़्यादती करते हैं तो उसको समझदारी के साथ मसले को सुलझाने की कोशिश करना चाहिए क्योंकि इस काम को उसके अलावा कोई और नहीं कर सकता।

याद रखिए! रिश्ते तोड़ने के लिए नहीं बल्कि जोड़ने के लिए होते हैं।

अगर मियाँ बीवी यह इरादा कर लें कि हमें सबसे मिलकर मोहब्बत के साथ जीना है तो कोई किसी को अलग नहीं कर सकता।

1-सूरए हुजरात/12, गुररुल हकम, 4/132

क्या कुरआन में सब कुछ है?

■ फ़साहत हुसैन

لَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ اِلَّا فِی کِتَابٍ مُبِينٍ

कोई खुश्क व तर ऐसा नहीं है जो किताबे मुबीन के अंदर छुपा हुआ न हो। (सूरए अन्आम/59)

कोई खुश्क व तर ऐसा नहीं है जो किताबे मुबीन के अंदर छुपा हुआ न हो। (सूरए अन्आम/59)

आपने अपनी ज़िंदगी में ऊपर लिखी हुई आयत बहुत बार सुनी होगी। हम में से बहुत से लोग यह समझते हैं कि इस आयत का मतलब यह है कि कोई भी खुश्क व तर यानी दुनिया की कोई भी ऐसी चीज़ नहीं है जो कुरआन में न हो। इसके बारे में सबसे पहला सवाल यह है कि क्या किसी रिवायत में यह है कि इस आयत में *''किताबुम मुबीन''* से मुराद कुरआन है। इस सवाल के जवाब के लिए जब हम कुरआन की तफ़सीरें देखते हैं तो हमें तफ़सीर की किसी भी किताब में कोई ऐसी रिवायत नहीं मिलती जिसमें कहा गया हो कि इस आयत में 'किताबुम मुबीन' का मतलब कुरआन है। अगर ऐसा है तो फिर किताबुम मुबीन क्या है? मासूमीन[अ०] ने फ़रमाया है कि इस से मुराद 'लौहे महफ़ूज़' है। लौहे महफ़ूज़ भी आसमान में लटकी हुई किसी लकड़ी या लोहे की तख़्ती का नाम नहीं है बल्कि यह खुदा का इल्म है जिसमें दुनिया की हर चीज़ मौजूद है और उस से कुछ भी छुपा हुआ नहीं है। पेड़ पर उगने और उस से गिरने वाले हर पत्ते, बारिश की हर बूँद, सूरज, चाँद और सितारों की फैलाई हुई रौशनी और इन्सानों की हर बात, हर काम, आँखों के इशारों, चेहरों के उतार-चढ़ाव और उनके दिलों में छुपी हुई हर बात को वह अच्छी तरह जानता है।

अगर हम इस पूरी आयत को पढ़ें तो हमारे लिए यह बात बिल्कुल साफ़ हो जाएगी। यह सूरए अन्आम की 59वीं आयत है जिसमें खुदा फ़रमा रहा है, ''उसके पास ग़ैब के ख़ज़ाने हैं जिन्हें उसके अलावा कोई नहीं जानता है और वह खुश्क व तर, सब का जानने वाला है। कोई पत्ता भी गिरता है तो वह उसे जानता है'' खुदा अपने इल्म को बयान करते हुए फ़रमाता है, ''ज़मीन के अंधेरों में कोई दाना या कोई खुश्क व तर ऐसा नहीं है जो किताबे मुबीन के अंदर छुपा हुआ न हो''। इस आयत से ही पता चल जाता है कि किताबे मुबीन का मतलब कुरआन नहीं है।

बहुत से लोग इसी आयत को बेस बनाकर हर नई रिसर्च को कुरआन पर थोपने की कोशिश करते हैं। चाहे इसके लिए उन्हें कुरआन के मायने ही क्यों न बदलने पड़ें। जब डारविन ने Theory of Evolution पेश की थी और दुनिया में इस नज़रिए को सौ फ़ीसद सही समझ लिया गया था तो बहुत से लोगों ने इस नज़रिए को कुरआन पर थोपने की कोशिश की थी और कुरआन ने इन्सान की पैदाइश की जो स्टेजेस बयान की हैं उन्हें इस नज़रिए के मुताबिक़ बताया था। Theory of Evolution को बाद में साइंसदानों ने ग़लत साबित कर दिया लेकिन अगर ग़लत साबित न भी किया होता तब भी उसे कुरआन से बहरहाल साबित नहीं किया जा सकता। यह उतना ही ग़लत है जितना *''अल्लाहु नूरुस-समा-वाति वल अर्ज़* यानी अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर है*''* से बिजली की पैदाईश साबित करना।

आयत की इस तफ़सीर की वजह से किसी बच्चे ने अपने टीचर से पूछा कि जब कुरआन में सब कुछ है तो कम्प्युटर का ज़िक्र तो ज़रूर होगा क्योंकि कम्प्युटर सारी दुनिया पर छाया हुआ है। फिर कैसे हो सकता है कि यह कुरआन में न हो तो टीचर ने जवाब दिया कि बिल्कुल है। कम्प्युटर Compute से है जिसका मतलब Calculation है और कुरआन में केल्कुलेशन का बहुत ज़िक्र है। खुदा ने अपने बारे में भी कहा है कि उससे ज़्यादा हिसाब व किताब रखने वाला कोई और नहीं है। इतनी बहुत सी आयतों में कम्प्युटर है। बच्चे की समझ में तो नहीं आया लेकिन वह चुप हो गया।

इसी तरह बहुत से लोगों को हर नई रिसर्च के बारे में यह कहने का

शौक़ होता है कि 'यह तो चौदह सौ साल पहले से हमारी किताब में है'। और यह बात इतने तंज़ के लहजे में कही जाती है जैसे दसियों साल की रिसर्च करने वालों की मेहनत को एक फूँक में उड़ा दिया गया हो और एक जुमले में उनकी सारी मेहनत पर पानी फेर दिया गया हो।

इन सारी बातों का जवाब वह वाक़िआ है जिसे जार्ज जुर्दाक़ ने दुनिया भर में मशहूर अपनी किताब 'The Voice of Human Justice' में लिखा है कि एक अरब मुल्क का कोई लीडर किसी वेस्टर्न मुल्क में गया और जब सिविल राइट्स पर बात होने लगी तो उस अरब लीडर ने कहा कि आज आपने अपनी अवाम को जो राइट्स दिए हुए हैं यह हमारे लिए कोई नए नहीं हैं। हम आपसे बहुत आगे हैं क्योंकि आज से चौदह सौ साल पहले अरब के एक बड़े स्कॉलर अली[अ] अपनी किताब नह्जुल बलाग़ा में यह राइट्स बयान कर चुके हैं। जिस पर उस वेस्टर्न मुल्क के लीडर ने कहा कि फिर तो अरब कंट्रीज़ हम से आगे नहीं हो सकते बल्कि चौदह सौ साल पीछे हैं क्योंकि आप लोग अपनी किताब में इस सबके होते हुए भी अभी तक हमारे बराबर नहीं आ सके और अपनी अवाम को वह राइट्स नहीं दे सके हैं जो हम ने दिए हैं।

कुछ लोग जनाबे इब्ने अब्बास का यह क़ौल बयान करते हैं कि उन्होंने कहा है कि अगर मेरे घोड़े का चाबुक खो जाए तो मैं उसे क़ुरआन से ढूँढता हूँ। इसका मतलब है कि क़ुरआन में सब कुछ है यहाँ तक कि उनके चाबुक का पता भी है। बस इन्सान के पास इतना इल्म होना चाहिए कि उस से कुछ निकाल सके।

अगर उन्होंने यह कहा है और इस रिवायत का यही मतलब है तब भी जनाबे इब्ने अब्बास बहुत अहम शख़सियत हैं और भरोसेमंद रावी हैं लेकिन उनकी हैसियत सिर्फ़ इतनी ही है कि वह किसी मासूम[अ] से रिवायत बयान करें यानी उन्होंने रसूलुल्लाह[स] और हज़रत अली[अ] या दूसरे अहलेबैत[अ] को जो कुछ करते हुए देखा है या कहते हुए सुना है उसे बयान कर दें। जब हम नह्जुल बलाग़ा, सहीफ़-ए-सज्जादिया और उसूले काफ़ी जैसी किताबों में क़ुरआन के बारे में वह हदीसें देखते हैं जिन्हें मासूमीन[अ] ने बयान किया है तो हमें उनमें क़ुरआन की तारीफ़, उसकी तफ़सीर और इसका मक़सद बयान करने वाली ऐसी अज़ीम हदीसें दिखती हैं जिनकी हम इब्ने अब्बास से उम्मीद भी नहीं रखते लेनिक उनमें ऐसी कोई बात नहीं दिखाई देती है जैसी इब्ने अब्बास ने कही है।

कुछ रिवायतों में कहा गया है कि क़ुरआन में गुज़रे हुए ज़माने की ख़बरें भी हैं और फ़्युचर की भी। लेकिन ज़ाहिर है कि इसका मतलब यह है कि इसमें कुछ पिछले नबियों और गुज़री हुई क़ौमों के हालात बताए गए हैं और फ़्युचर की बातों में कुछ पेशेनगोइयाँ हैं और क़यामत की ख़बर दी गई है और उसके हालात बताए गए हैं। वरना क़ुरआन में तो सारे नबियों का भी ज़िक्र नहीं है और जिनका है उनकी भी पूरी ज़िंदगी नहीं है सिर्फ़ ज़िंदगी के कुछ वाक़िआत हैं।

तो क्या ऐसा है कि हम उन एक लाख चौबीस हज़ार नबियों के नाम और हालात नहीं समझ सकते लेकिन मासूमीन[अ] समझ सकते हैं? क्या वह क़ुरआन से उन नबियों के नाम और उनकी क़ौमों

के हालात निकाल सकते हैं? नहीं! ऐसा बिल्कुल नहीं है।

फिर क़ुरआन में है क्या?

क्या इन सब चीज़ों के क़ुरआन में न होने का मतलब यह नहीं है कि क़ुरआन मुकम्मल नहीं है? Incomplete है और उसमें कमी है?

इस सवाल का जवाब हमें उसी वक़्त मिल सकता है जब हम यह समझ जाएं कि क़ुरआन किस लिए नाज़िल हुआ है, क़ुरआन की क्या ज़िम्मेदारी है और उसने लोगों को क्या पैग़ाम दिया है। इन सवालों के जवाब हम 'मरयम' के अगले इशू में पेश करेंगे।

न्यु-बोर्न बेबी

ग़िज़ा और सेहत

औरतों की एक बहुत ख़ास ज़िम्मेदारी बच्चों के खाने-पीने का ध्यान रखना भी है। बच्चों की तन्दुरुस्ती और बीमारी, ख़ूबसूरती और बदसूरती, यहाँ तक कि ख़ुश मिज़ाजी और बद मिज़ाजी, ज़ेहानत और नासमझी का ताल्लुक़ भी उनके खाने-पीने से होता है। उनकी न्युट्रीशनल ज़रूरतें बड़ों की जैसी नहीं होतीं। बल्कि अलग-अलग उम्र में खाने-पीने के प्रोग्राम में भी तबदीली होती रहती है। एक बच्चे वाली माँ को इन सारी बातों का ध्यान रखना चाहिए।

बच्चे की बेहतरीन और मुकम्मल ग़िज़ा दूध है। बदन की ग्रोथ के लिए जिन न्युट्रीशंस की ज़रूरत होती है वह सब दूध में पाए जाते हैं। इसी वजह से माँ का दूध हर बच्चे के लिए बेहतरीन और कम्प्लीट फूड है। माँ के दूध में बच्चे के मेदे के हिसाब से ग़िज़ा पाई जाती है जिसे वह आसानी से हज़म कर लेता है। माँ के दूध की एक और ख़ूबी यह है कि इसमें किसी भी तरह की मिलावट नहीं होती, उसे गर्म करने की भी ज़रूरत नहीं, जबकि दूध या फल और सब्ज़ी वग़ैरा को गर्म करने से उसकी ग़िज़ाईयत कम हो जाती है। यही वजह है कि इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं, "बच्चे के लिए माँ के दूध से बेहतर और अच्छी कोई ग़िज़ा नहीं है।"

वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाईज़ेशन में Eastern Mediterranean Zone के प्रेसिडेंट डा. अब्दुल हुसैन तबा ने अपने एक मैसेज में कहा है, "सबसे बड़ा फ़ैक्टर जो बच्चे को बीमारियों के लिए तैयार करता है वह उसे माँ के दूध से महरूम करना है।"

बच्चे को दूध पिलाने वाली माओं को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे को दूध के ज़रिए हर न्युट्रीशियन जैसे कैलशियम, प्रोटीन, विटामिन वग़ैरा सही मिक़दार में पहुँच जाए। दूध में मौजूद पार्टिकल्स, माँ की ग़िज़ा के ज़रिए बनते हैं यानी माँ के दूध की कंडीशन उसके खाने-पीने के ऊपर डिपेंड करती है। माँ की ग़िज़ा जितनी परफ़ेक्ट और अलग-अलग तरह की होगी उसी लिहाज़ से उसका दूध भी परफ़ेक्ट और सारे न्युट्रीशियंस से भरपूर होगा। इसलिए दूध पिलाने वाली माओं को चाहिए कि इस स्टेज में अपनी ग़िज़ा का पूरा ध्यान रखें। उनकी ख़ूराक न्युट्रीशियंस के लिहाज़ से इतनी भरपूर हो जो ख़ुद उनकी और उनके बच्चे की न्युट्रीशनल नीड्स को पूरा कर सके। अगर इस बात का ध्यान नहीं रखेंगी तो ख़ुद उनकी और उनके बच्चे की सेहत ख़तरे में पड़ जाएगी।

शौहर पर भी ज़रूरी है कि अपनी बीवी के लिए ऐसी ताक़तवर ग़िज़ाओं का इंतेज़ाम करे जो न्युट्रीशियंस से भरपूर हों और इस तरह से अपने बच्चे की सेहत व तंदुरुस्ती के रास्ते तलाश करे। अगर उसने इस सिलसिले में लापरवाही की तो इसका जुर्माना दवा और डाक्टर की फ़ीस की सूरत में अदा करना होगा। इस सिलसिले में डाक्टर से भी सलाह ली जा सकती है और किताबों से भी मदद ली जा सकती है। शार्ट में यूँ कहा जा सकता है कि माँ की ग़िज़ा परफ़ेक्ट होनी चाहिए। अलग-अलग तरह की ग़िज़ाएं खाई जाएं यानी किसी एक ही ग़िज़ा के पीछे न पड़ा जाए। उसकी ग़िज़ा में सब्ज़ियां, फल, दालें, गोश्त, अंडे, दूध, दही, मक्खन वग़ैरा सभी कुछ हो जिनका बराबर इस्तेमाल होना चाहिए। बिना किसी शक के यह कहा जा सकता है कि माँ के दूध का अच्छा या बुरा असर बच्चे पर ज़रूर पड़ता है इसलिए इस चीज़ को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, "बच्चों को दूध पिलाने के लिए बेवक़ूफ़ औरतों को मत चुनो क्योंकि दूध बच्चे के नेचर को बदल देता है।"

हज़रत इमाम बाक़िर[अ०] फ़रमाते हैं, "दूध पिलाने के लिए ख़ूबसूरत औरतों को चुनो क्योंकि दूध का असर होता है और दूध पिलाने वाली औरत की सिफ़तें दूध पीने वाले बच्चे में ट्रांसफ़र हो जाती हैं।"

बच्चे को दूध पिलाने की एक टाइमिंग भी तय कीजिए ताकि उसे एक सिस्टम की आदत पड़ जाए और वह सब्र करने का आदी बन सके, साथ ही उसका पेट और मेदा भी ठीक से काम करे। अगर पंकचुअलिटी का लिहाज़ न रखा गया और जहाँ बच्चा रोया उसको दूध दे दिया गया तो उसकी भी यही आदत पड़ जाएगी।

बड़े होकर भी यही आदत उसके नेचर में

अक्सर सामने आते रहते हैं।

अगर आपका दूध बच्चे के लिए कम पड़ता हो तो गाय का दूध इस्तेमाल कर सकती हैं। गाय का दूध माँ के दूध से ज़्यादा गाढ़ा होता है और उस में मिठास कम होती है। इसलिए उसमें थोड़ा सा पानी और शकर मिला लीजिए या पॉसच्युराईज़्ड दूध का या ताज़ा ब्रेड दूध में भिगोकर खिलाइए, ताज़ा पनीर और मीठा दही भी बच्चे के लिए अच्छा है। नौ महीने की उम्र से अपने खाने में से थोड़ा-थोड़ा करके खिलाइए। आपकी तरह बच्चे को भी पानी की ज़रूरत होती है, इसलिए बच्चे को पानी बराबर पिलाती रहिए। अक्सर बच्चे प्यास की वजह से रोते हैं। ख़ास तौर पर फलों का रस, सब्ज़ियों और हड्डियों का सूप बच्चे के लिए बहुत अच्छा है। लेकिन जहाँ तक हो सके उसके मेदे को चाय पिलाकर ज़हरीला न बनाएं।

शामिल हो जाएगी। आज़ादी का जज़्बा ख़त्म हो जाएगा, ज़िंदगी की मुश्किलों में सब्र व हौसले से काम नहीं लेगा। छोटी से छोटी बात के लिए भी या तो ज़िद करेगा या रोना-पीटना शुरु कर देगा। यह न सोचिए कि न्यु बोर्न बेबी में पंकचुआलिटी पैदा करना मुश्किल है। जी नहीं! अगर कुछ दिन सब्र से काम लिया तो जल्दी ही आपकी मर्ज़ी के मुताबिक़ उसकी आदत पड़ जाएगी। बच्चों की ग़िज़ा के एक्सपर्टस का कहना है कि न्यु बोर्न बेबी को हर तीन चार घंटे के बाद दूध पिलाना चाहिए।

दूध पिलाते वक़्त बच्चे को अपनी गोद में लिटा लीजिए। इस तरह उसके लिए दूध पीना आसान होगा और आपकी मोहब्बत व मेहरबानी का भी वह एहसास करेगा। और यही एहसास उसकी आगे बनने वाली पर्सनॉलिटी बनाने में भी मददगार साबित होगा। बच्चों को अपने पहलू में लिटाकर दूध न पिलाइए क्योंकि हो सकता है कि ऐसी हालत में दूध उसके मुँह में हो, आपको नींद आ जाए और वह मासूम बच्चा अपना बचाव न कर सके और उसका दम घुटने लगे। इस बात को यूं ही मत टाल दीजिए क्योंकि इस तरह के हादसे इस्तेमाल कीजिए। दूध को पन्द्रह बीस मिनट तक ख़ूब ब्वायल कीजिए ताकि उसमें मौजूद बैक्टीरिया मर जाएं। बच्चे को बहुत ज़्यादा गर्म या ठंडा दूध न दें बल्कि इस दूध का भी माँ के दूध जैसा ही टम्प्रेचर होना चाहिए। हर बार पिलाने के बाद फ़ौरन फ़ीडर को अच्छी तरह धो लीजिए, ख़ास कर गर्मियों में बहुत ध्यान रखना चाहिए क्योंकि गर्मियों में जल्दी सड़न पैदा हो जाती है जो बच्चे की सेहत के लिए बहुत ख़तरनाक है। ध्यान रहे कि ख़राब या रखा हुआ दूध बच्चे को न दें। बेहतर है कि दूध पिलाने के लिए ऐसे फ़ीडर्स का इस्तेमाल करें जिनमें वज़न के निशान बने होते हैं ताकि बच्चे की ख़ूराक की क्वांटिटी भी मालूम रहे। अगर बच्चे को पाउडर मिल्क देना चाहती हैं तो बच्चों के डाक्टर से मश्वरा ले लीजिए क्योंकि मार्केट में अलग-अलग तरह के पाउडर पाए जाते हैं और डाक्टर ही सही मश्वरा दे सकता है कि आपके बच्चे के लिए कौन सा दूध मुनासिब है।

बच्चे को फलों का रस भी दीजिए। पाँच-छः महीने की उम्र से थोड़ा-थोड़ा करके खाने की आदत भी डलवाइए। पतला सूप दीजिए। बिस्किट

बच्चे की सफ़ाई और तन्दुरुस्ती का भी बहुत ख़याल रखिए। उसका बिस्तर और कपड़े हमेशा बहुत साफ़-सुथरे हों। उसको रोज़ नहलाएं क्योंकि बच्चे पर बेक्टीरिया जल्दी असर करते हैं। अगर सेहत का ख़याल न रखा तो बच्चे के बीमार हो जाने का ख़तरा है।

बच्चे को बीमारियों के टीके लगवाना भी ज़रूरी है। चेचक, ख़सरा, काली खांसी, पोलियो वग़ैरा जैसी बीमारियों के टीके लगवाकर इन बीमारियों की रोकथाम कीजिए क्योंकि बीमारी के आने से पहले ही उसका इलाज होना चाहिए। अच्छी बात यह है कि इस तरह की बीमारियों के टीके अस्पतालों में मुफ़्त लगाए जाते हैं।

अगर आपने सेहत व तंदुरुस्ती के तमाम उसूलों का पूरा ध्यान रखा तो आपके बच्चे सेहतमंद और हंसते-खेलते रहेंगे। ●

इमाम
हसन असकरी[अ०]

इमाम हसन असकरी[अ०] शियों के ग्यारहवें इमाम हैं। आपकी विलादत २३२हि० में हुई थी। अब्बासी ख़लीफ़ा मोतमद बिल्लाह ने आपको ज़हर देकर ८ रबीउल अव्वल के दिन आपको शहीद करवा दिया था।

ग्यारहवें इमाम अपने वालिद की शहादत के बाद खुदा के हुक्म से इमामत के बुलंद मंसब पर फ़ाएज़ हुए। आपने अपनी सात साल की इमामत के दौरान ख़लीफ़ा की सख़तियों और ज़ुल्मो सितम के वजह से तक़ैय्ये की हालत में बड़ी एहतियात से क़दम उठाए थे। इसीलिए आप आम लोगों को, यहां तक कि शियों को भी अपने पास आने की इजाज़त नहीं देते थे सिवाए उन ख़ास लोगों के जिनको आप ज़ाती तौर से जानते थे। आपने अपनी ज़्यादातर ज़िदगी नज़रबंदी में गुज़ारी थी।

ख़लीफ़ा की वह तमाम सख़तियां और दबाव इसलिए था क्योंकि एक तो उस ज़माने में शियों की तादाद व ताक़त बहुत बढ़ चुकी थी और दूसरे शिया इमामत के मानने वाले हैं, यह बात सब पर वाज़ेह और रौशन हो चुकी थी और शियों के अइम्मा[अ०] भी जाने-पहचाने थे। इसीलिए हर ख़लीफ़ा, अपने वक़्त के इमाम को ज़्यादा से ज़्यादा अपने कंट्रोल में रखता था और अपने ख़ुफ़िया मंसूबों के ज़रिए अइम्मा[अ०] को ख़त्म करने की कोशिश करता था।

दूसरे यह कि ख़लीफ़ा को मालूम हो चुका था कि शिया ग्यारहवें इमाम[अ०] के बेटे पर ईमान रखते हैं। ग्यारहवें इमाम[अ०] के अलावा पिछले अइम्मा की हदीसों से पता चलता था कि यही फ़रज़ंद, इमाम मेहदी[अ०] होंगे जिनके बारे में हदीसों के ज़रिए सभी ने ख़बर दी है और उन्हीं को आख़िरी इमाम माना जाता है।

इसी वजह से दूसरे तमाम अइम्मा[अ०] से ज़्यादा ग्यारहवें इमाम को ख़लीफ़ा ने अपने कंट्रोल में रखा था और ख़लीफ़ भी पक्का फ़ैसला कर चुका था कि जिस तरह भी हो, शिया इमामत की कहानी को ख़त्म कर देना है और इस दरवाज़े को हमेशा-हमेशा के लिए बंद कर देना है।

इस तरह जैसे ही ग्यारहवें इमाम[अ०] की बीमारी की ख़बर ख़लीफ़ा को पहुँची तो उसने फ़ौरन आपके पास तबीब और हकीम भेज दिए और साथ ही अपने कुछ भरोसे के लोगों को भी आपके घर में तैनात कर दिया जो क़ाज़ी थे। यह लोग हमेशा आपके साथ-साथ रहते थे ताकि घर के अंदर और बाहर के हालात पर नज़र रख सकें।

इमाम[अ०] की शहादत के बाद भी आपके घर की तलाशी ली गई थी और दाईयों के ज़रिए आपकी कनीज़ों का मुआयना कराया गया था। दो साल तक ख़लीफ़ा के गुमाश्ते आपके बेटे को तलाश करने की कोशिश करते रहे, यहाँ तक कि बिल्कुल नाउम्मीद और मायूस हो गए।

ग्यारहवें इमाम को उनकी शहादत के बाद शहरे सामर्रा में उनके घर के अंदर उनके वालिद माजिद के पहलू में दफ़न किया गया।

इमाम हसन असकरी[अ०] फ़रमाते हैं:

"जो शख़्स दुनिया में अपने मोमिन भाईयों के साथ तवाज़ो व इन्केसारी के साथ पेश आएगा, खुदा उसको सच्चों और अली इब्ने अबी तालिब[अ०] के शियों में शुमार करेगा।"

"ख़ुदावंदे आलम ने बुराई के लिए बहुत से ताले क़रार दिए हैं। उनकी कुंजी शराब है और झूठ बोलना शराब से भी बदतर है।"

"लोगों की ग़लत आदतें छुड़ा देना किसी मोजिज़े से कम नहीं है।"

"तमाम लोगों में सबसे बड़ा मुजाहिद वह शख़्स है जो गुनाहों को छोड़ दे।"

"बहस न करो वरना एहतेराम ख़त्म हो जाएगा। हंसी व मज़ाक़ न करो वरना लोग गुस्ताख़ी से पेश आएंगे।"

"रोज़ा-नमाज़ की ज़्यादती को इबादत नहीं कहते बल्कि ख़ुदा के अम्र में ग़ौरो फ़िक्र करना इबादत है।"

"कमर तोड़ देने वाली बलाओं में से एक वह पड़ोसी है जो जब कोई अच्छाई देखता है तो छिपा लेता है और जब बुराई देखता है तो उसे सबको बता देता है।"

मेज़बानी

■ मौलाना मीसम ज़ैदी

अच्छी-अच्छी बातें

Be my guest

दुनिया का सबसे अच्छा सिस्टम ऑफ़ लाईफ़ वही माना जाता है जिसमें ज़िंदगी की बुनियादी बातों के साथ-साथ छोटी-छोटी चीज़ों को भी अहमियत दी गई हो। इस्लाम ऐसा सिस्टम ऑफ़ लाईफ़ है जिसमें ज़िंदगी के बहुत से छोटे-छोटे मसलों को भी बता दिया गया है। उन्हीं में से एक मेहमान नवाज़ी और मेज़बानी की अहमियत है। ज़िंदगी के बहुत से कामों में जल्दबाज़ी करने के लिए मना किया गया है लेकिन कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिनमें जल्दी करने पर ज़ोर भी दिया गया है जैसे किसी नौजवान की शादी कराना, किसी का क़र्ज़ अदा करना, अपने गुनाहों से तौबा करना और मेज़बानी करना। यह वह काम हैं जिनमें जल्दबाज़ी को अच्छा बताया गया है।

अम्बिया[अ०] मेज़बानी और सख़ावत को बहुत ज़्यादा पसंद करते थे। इस्लामी टीचिंग्स में मेज़बानी यह नहीं है कि मेहमान से सवाल किया जाए कि आपने खाना खाया है या नहीं या आपको खाने की ख़्वाहिश है या नहीं बल्कि जो कुछ भी हो पेश कर देना ही चाहिए। कोई छोटी सी बात भी अगर मेहमान के लिए तौहीन की वजह बने तो उसका मेज़बान ज़िम्मेदार होता है। मेज़बानी इतनी ज़्यादा अहम है जिसके लिए सख़्तियों और मुसीबतों को झेलने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। कोई ज़रूरी नहीं कि मेहमान हमेशा जाना पहचाना हो, किसी अजनबी या भटके हुए इन्सान को भी बुलाकर अपना मेहमान बनाया जा सकता है। मेहमानों की मेज़बानी करना नबियों की सीरत रही है। इस्लाम में मेज़बानी को अहमियत दी गई है न कि अलग-अलग तरह के खानों को।

हज़रत इब्राहीम[अ०] की मेज़बानी का क़ुरआन मजीद में इस अंदाज़ से तज़किरा किया गया है, " इब्राहीम[अ०] के पास हमारे नुमायन्दे बशारत लेकर आए और आकर सलाम किया तो इब्राहीम[अ०] ने भी सलाम किया। और थोड़ी देर भी नहीं गुज़री थी कि एक भुना हुआ बछड़ा ले आए।" (1)

इस्लाम ने मेहमानों के लिए ख़ुदा से मग़फ़िरत माँगने का हुक्म दिया है। क़ुरआने मजीद में है, "परवरदिगार! मुझे और मेरे माँ-बाप और जो ईमान के साथ मेरे घर में आ जाएं और तमाम मोमिनीन व मोमिनात को बख़्श दे और ज़ालिमों के लिए हलाक होने के अलावा किसी चीज़ में इज़ाफ़ा न करना।" (2)

रावी कहता है कि इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने मुझ से फ़रमाया, "आख़िर तुम रोज़ाना ग़ुलाम आज़ाद क्यों नहीं करते?" मैंने कहा, "मेरी अंदर इतनी ताक़त नहीं है।" तो इमाम[अ०] ने फ़रमाया, "रोज़ाना किसी मुसलमान को खाना खिला दो।" मैंने कहा कि किसी मालदार को या सिर्फ़ ज़रूरतमंद को?" आप[अ०] ने फ़रमाया, "कभी मालदार को भी खाने की ज़रूरत पड़ती है।" इसका मतलब यह हुआ कि खाना खिलाना हर हाल में सवाब का काम है चाहे किसी भी को खिलाया जाए।

रावी कहता है इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया, "जो शख़्स भी ख़ुदा की राह में अपने मोमिन भाई को खाना खिलाएगा उसे उस शख़्स की तरह सवाब मिलेगा जिसने किसी एक जमाअत को खाना खिलाया हो।" मैंने कहा, "जमाअत का मतलब कितने लोग हैं?" तो आप ने फ़रमाया, "एक लाख लोग"।

इसी तरह इमाम सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं, "जो शख़्स किसी मालदार मोमिन को खाना खिलाएगा उसे हज़रत इस्माईल[अ०] की औलाद से एक बेटे को आज़ाद करने का

सवाब मिलेगा। यानी उस बेटे को ज़िबह होने से निजात दिला दी और जो शख़्स किसी ज़रूरतमंद मोमिन को खाना खिलाएगा उसे इस्माईल[अ०] के सौ बेटों को आज़ाद करने का सवाब मिलेगा जैसे उसने हर एक को ज़िबह होने से बचा लिया।''

मेज़बानी इस्लामी अख़लाक़ का बेहतरीन नमूना है

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया, ''मकारिम दस चीज़ें हैं अगर तुम चाहो कि तुम्हारे अंदर यह अच्छाईयाँ पैदा हो जाएं तो पैदा हो जाएंगी। यह अच्छाईयाँ कभी बाप में होती हैं लेकिन उसकी औलाद में नहीं और कभी औलाद में पाई जाती हैं लेकिन बाप में नहीं, कभी नौकर में पाई जाती हैं मगर मालिक में नहीं पाई जाती हैं।''

सवाल किया गया, ''वह कौन सी अच्छाईयाँ है?'' तो इमाम[अ०] ने फ़रमाया, ''डर के बावजूद हक़ बात कहना, बातों में सच्चाई, अमानतदारी, सिल-ए-रहम, मेल-जोल, मेज़बानी, मांगने वाले को खाना खिलाना, पड़ोसी के लिए फ़िक्रमंद रहना, दोस्त के लिए फ़िक्रमंद रहना (फ़िक्रमंद रहने का मतलब उसकी टोह में रहना नहीं है बल्कि उसकी मुश्किलों में काम आना है) और सबसे ज़्यादा अहम शर्मो हया है कि किसी मोमिन को इज़्ज़त देना ख़ुदा को इज़्ज़त देने के बराबर है।''

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं, ''जब कभी कोई अपने मुसलमान भाई की इज़्ज़त व एहतेराम करता है तो यह ऐसे है जैसे उसने ख़ुदा की इज़्ज़त व एहतेराम किया।''

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] फ़रमाते हैं, ''ख़ुदावंदे आलम ने क़ुर्बानी करने और लोगों को खाना खिलाने को अपना पसंदीदा बताया है।''

एक दिन रसूले अकरम[स०] के अस्हाब आपके घर तशरीफ़ लाए। घर में काफ़ी लोग मौजूद थे। नए आने वालों के लिए जगह बाक़ी नहीं रह गई थी कि इतने में एक मुसलमान जिसका नाम जरीर था, पहुँचा। उसने देखा कि घर भरा हुआ है तो वह उस घर के दरवाज़े पर पहुँच कर ज़मीन पर बैठ गया। पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने जब जरीर को देखा तो आपने अपना लिबास जरीर की तरफ़ बढ़ा दिया और कहा कि इस लिबास को ज़मीन पर बिछाकर इस पर बैठ जाओ। रसूले इस्लाम[स०] के इस काम से जरीर बहुत ज़्यादा मुतास्सिर और जज़्बाती हो गए। उन्होंने लिबास को हाथों पर लिया और अपनी आँखों से उसको चूमने लगे।

मेहमान ख़ुदा का भेजा हुआ होता है। इन्सान को कभी मेहमान के आने पर मुँह नहीं बनाना चाहिए बल्कि अपनी बिसात भर उसकी बेहतरीन मेज़बानी के लिए पूरी कोशिश करना चाहिए। चाहे मेहमान पैसे वाला हो या ग़रीब और फ़क़ीर।

आसिम बिन हमज़ा कहते हैं कि मैं एक दिन हज़रत अली[अ०] के पास गया। देखा कि आप ग़मगीन हैं। मैंने वजह पूछी तो हज़रत ने फ़रमाया, ''सात दिन गुज़र गए लकिन कोई मेहमान नहीं आया। मुझे ख़ुदा से डर लगता है कि कहीं ख़ुदा का लुत्फ़ हम पर से उठा तो नहीं लिया गया है।''

मेहमान के लिए कुछ रिवायतों में यहाँ तक मिलता है कि मेहमान का एहतेराम करो चाहे वह काफ़िर ही क्यों न हो। यानी इस फ़रीज़े को पूरा करने के लिए मेहमान का मुसलमान होना शर्त नहीं है।

मआज़ बिन जबल कहते हैं कि एक दिन मेरे घर एक मेहमान पहुँचा लेकिन मेरे पास सूखी हुई रोटी और गोश्त के सालन के अलावा कुछ नहीं था। मैंने शर्मिंदगी के साथ उसी खाने को मेहमान के सामने पेश कर दिया। बाद में मैंने रसूले इस्लाम[स०] से सवाल किया कि क्या मेरे इस काम का भी कोई अज्र व सवाब है? आप ने फ़रमाया, ''अगर आसमान के तमाम फ़रिश्ते जमा हो जाएं फिर भी उनके बस में नहीं कि इस खाना खिलाने

और मेज़बानी का सवाब बयान कर सकें।''

मेज़बानी ऐसी होना चाहिए जिसमें फ़ुज़ूलख़र्ची, इसराफ़ और दिखावा न पाया जाए। ख़ुदा फ़ुज़ूलख़र्ची करने वालों को पसंद नहीं करता है जैसा कि क़ुरआन में है, ''ख़ुदा फ़ुज़ूलख़र्ची करने वालों को पसंद नहीं करता है।'' [3]

कुछ जगहों पर मेज़बानों में इतनी फ़ुज़ूलख़र्ची की जाती है कि कहावत भी बन गई है:- ''जितना बड़ा दस्तरख़्वान उतना ही बड़ा कूड़ेदान''।

यह बात ज़्यादातर बेदीन दौलतमंदों के दस्तरख़्वान पर नज़र आती है कि बीस लोगों का खाना पाँच खाने वालों के लिए लगाया जाता है और जो कुछ बचता है वह दस्तरख़्वान के साथ उठाकर कूड़ेदान में डाल दिया जाता है। अलहम्दुलिल्लाह! यह बीमारी अभी हमारे मुल्क में बहुत कम पाई जाती है लेकिन कुछ अरब मुल्कों में यह लानत बहुत ज़्यादा फैल चुकी है।

इस्लाम हर चीज़ में बैलेंस को पसंद करने वाला मज़हब है इसलिए ज़िंदगी के हर मौक़े पर बैलेंस ही को पसंद करता है। इस्लाम में कंजूसी और फ़ुज़ूलख़र्ची दोनों को बुरा कहा गया है। क्योंकि कंजूसी करने वाला दुनिया में ग़रीबों की तरह ज़िंदगी गुज़ारता है लेकिन उसे आख़िरत में अमीरों जैसा हिसाब देना होगा और फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले को इतना ज़्यादा बुरा कहा गया है कि उसे अपने माल को भी इस्तेमाल करने का हक़ नहीं दिया गया है बल्कि हाकिमे शरा उसी के माल से निकाल कर फ़ुज़ूलख़र्च इन्सान को खाने-पीने के लिए ज़रूरत भर पैसा देगा और बाक़ी सारा पैसा हाकिमे शरा के क़ब्ज़े में रहेगा।

1-सूरए हूद, 69, 2-सूरए नूह, 28, 3-सूरए अन्आम, 141

चाय के बिना क्या आप अपने दिन की शुरूआत के बारे में सोच सकती हैं? कितना अच्छा हो कि पनीर या किसी अन्य चीज़ की तरह आप चाय की भी अलग-अलग रेसिपी सीख लें।

tea

चाकलेटी चाय

पानीः 2 कप
टी बैगः 4
लौंग पाउडरः 1/4 चम्मच
इलायची पाउडरः 1 चम्मच
दालचीनी पाउडरः 1 चम्मच
अदरक पाउडरः 1/2 चम्मच
चीनीः 2 चम्मच
दूधः 4 चम्मच
चॉकलेट सॉसः 2 चम्मच

तरीक़ा

पानी गर्म करें और उसमें टी बैग्स डालकर दो मिनट के लिए उबालें। चीनी डालकर धीमी आंच पर दो मिनट और उबालें। अब लौंग, इलायची, दालचीनी, जायफल और इलायची का पाउडर डालकर एक मिनट और पकाएं। अब दूध डालें और अच्छी तरह से मिक्स करें। कप में चाय को छान लें। हर कप के ऊपर थोड़ा-सा क्रीम और चॉकलेट सॉस डालें और गर्मागर्म सर्व करें।

मसालेदार कोको चाय

पानीः 2 कप
टी बैग्सः 5
चीनीः 4 चम्मच
कोको पाउडरः 2 चम्मच
दूधः 1 कप
वनीला अर्क़ः 1/4 चम्मच
दालचीनी पाउडरः 1/4 चम्मच
जायफ़ल पाउडरः 2 चुटकी

तरीक़ा

पानी को उबालें और उसमें टी बैग डालें। चीनी डालें और चाय को अच्छी तरह से उबालें। टी बैग्स निकाल लें। चाय में कोको पाउडर, दूध, दालचीनी पाउडर, जायफल पाउडर और वनीला अर्क़ डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। चाय को छान लें और गर्मागर्म सर्व करें।

मोरक्कन पुदीना चाय

पानीः 2 कप
ग्रीन टीः 1 चम्मच
पुदीना पत्तीः 10
चीनीः दो चम्मच

तरीक़ा

दो कप पानी को उबालें और उसमें एक चम्मच ग्रीन टी डालकर दो मिनट तक पकाएं। अब चीनी डालें। चाय को कप में छान लें और पुदीना पत्ती से गार्निश करके सर्व करें।

परवरिश में कमी...

फिर नई नस्ल से शिकायत क्यों?

■ मैहनाज़ अशरफ़

एक आम इल्ज़ाम है कि आज कल के बच्चे और नौजवान बिगड़ते या हाथ से निकलते जा रहे हैं। बेअदब, गुस्ताख़, बद तहज़ीब, बेबाक, ज़बान दराज़, नाफ़रमान, वेस्टर्न ज़बान व कल्चर के दीवाने और न जाने क्या कुछ हैं। मगर कोई तस्वीर के दूसरे रुख़ से पर्दा उठा कर यह समझने की कोशिश भी तो करे कि आख़िर कल के मुक़ाबले में आज की नई नस्ल ऐसी क्यों है? उसे ऐसा बनाने में किस से और कहां कमी हुई है?

यह तो साफ़ है कि कोई बच्चा बुरा पैदा नहीं होता। मां-बाप की परवरिश, माहौल और समाजी हालात से मिलकर ही बच्चों की पर्सनॉलिटी पूरी होती है। आज के मां-बाप अगर अपना मुक़ाबला कल के मां-बाप से करें तो उन पर आसानी से यह सच्चाई खुल जाएगी कि उनकी अपनी कमियों की वजह से ही आज की नई नस्ल बिगड़ती जा रही है।

हालात का जाएज़ा लिया जाए तो कल के मां-बाप औलाद की परवरिश इस्लामी व समाजी बुनियाद पर करते थे। ख़ुद भी सच्चा मुसलमान और अच्छा इंसान बन कर ज़िंदगी गुज़ारने की कोशिश करते थे। इस तरह घर वाले अच्छी तहज़ीब व अख़लाक़ के नमूने थे। सादगी, क़िनाअत, शर्म, रवादारी, अदब व आदाब और दूसरी इस्लामी व समाजी रिवायतें ख़ुद से नस्ल में आगे बढ़ती रहती थीं जिस तरह ख़रबूज़ा ख़रबूज़े को देखकर रंग पकड़ता है। ज्वाइंट फ़ैमिली उसी दौर की यादगार है। इसके उलट आज मां-बाप अपने मां-बाप या सास-ससुर से ही ऊँची आवाज़ में लड़ते-झगड़ते रहते हैं। शादी होते ही अलग होने की बातें शुरू हो जाती हैं। बच्चा ऐसे माहौल में आंख खोलेगा तो ख़ाक बड़ों का अदब सीखेगा। औलाद की परवरिश की बारी आए तो उसे शुरू ही से वेस्टर्न कपड़ों का आदी बना दिया जाता है। ज़रा बड़ा हुआ तो इंटरनेट व केबिल की मदद से वेस्टर्न कल्चर से

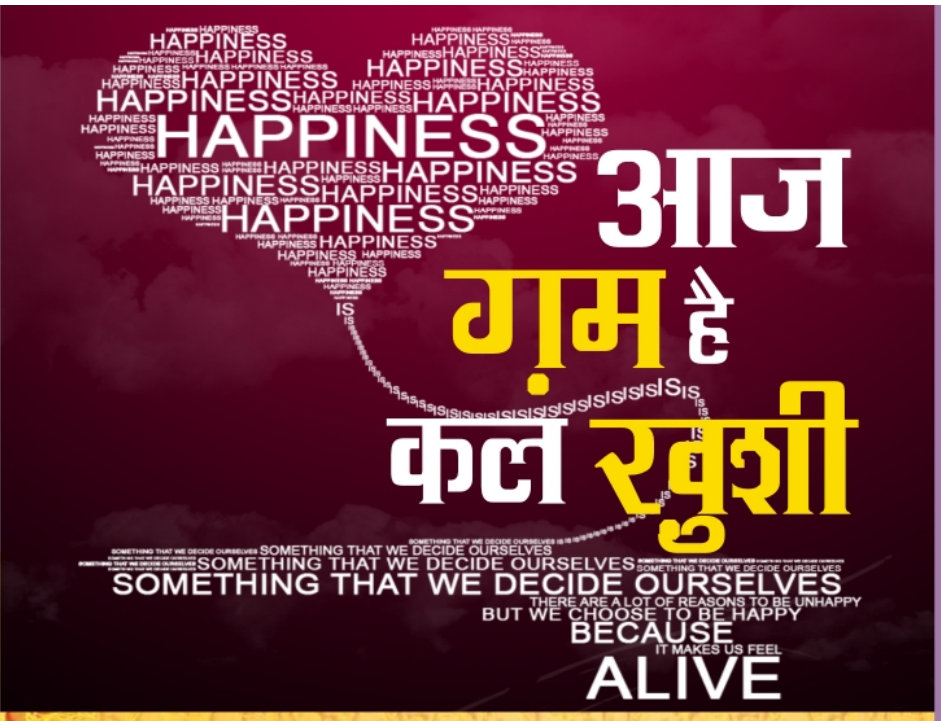

■ सना जीलानी

ज़िंदगी एक ऐसी नेमत है जो सिर्फ़ एक बार मिलती है और उसी की वजह से हमें अल्लाह तआला दूसरी और बहुत सी नेमतें देता है लेकिन कुछ नाशुक्र औरतें ज़िंदगी से नाराज़ सी नज़र आती हैं। छोटी-छोटी परेशानियों पर क़िस्मत का रोना रोने बैठ जाती हैं। जबकि अल्लाह तआला किसी भी इंसान को उसकी ताक़त से ज़्यादा नहीं आज़माता। अगर कोई परेशानी है भी तो माथे पर शिकनों के बजाए होंठों पर मुस्कुराहट लाकर उसका मुक़ाबला करना चाहिए। अच्छे हालात तो हंस कर सब ही गुज़ार लेते हैं, अच्छाई तो यह है कि बुरे हालात को भी हंस कर सहा जाए। आप ज़िंदगी को पॉज़िटिव तरीक़े से भी देख सकती हैं। ज़िंदगी की मिसाल मुस्कुराहटों और आंसूओं के बीच लटके पिंडोलम की सी है, जो थोड़ी-थोड़ी देर पर दायें-बायें यानी आंसुओं व मुस्कुराहटों के बीच लुढ़कता रहता है। बस आप यह यक़ीन रखें कि आज ग़म है तो कल ख़ुशी भी होगी। ज़िंदगी सिर्फ़ आज का नाम है, क्या पता कल हो या न हो। इसलिए अपनी ज़िंदगी को कभी मत कोसिए बल्कि उससे मुहब्बत कीजिए, अच्छा सोचिए, अच्छा बोलिए और अमल कीजिए।

हम में से बहुत सी औरतें दौलत को ही ज़िंदगी की सारी ख़ुशियां पाने का ज़रिया समझती हैं। अगर यह सच्चाई होती तो आज सारे दौलतमंद लोग ख़ुश और अपनी ज़िंदगियों से मुतमईन होते मगर ऐसा नहीं है। अपनी ज़िंदगी को ख़ूबसूरत बनाने और उसकी अहमियत को जानने के लिए हम मोमबत्ती से सबक़ ले सकते हैं जो ख़ुद जलकर दूसरों को रोशनी देती है। हमेशा पिछली ख़ुशगवार बातों को याद कीजिए, 'आज' को भरोसे के साथ मुस्कुरा कर गुज़ारिए और फ़्यूचर के लिए उम्मीदें रौशन रखिए।

ज़िंदगी कोई खेल नहीं है कि हालात से तंग आकर फ़ौरन उसे ख़त्म करने का फ़ैसला कर लिया जाए जो हमारी औरतें अक्सर कर बैठती हैं। हो सकता है कि आपकी ज़िंदगी की किताब में ग़म के एक पन्ने के बाद अगले सारे पन्ने ख़ुशियों से भरे हों तो क्या आप अपनी ज़िंदगी के ख़ुशियों भरे पन्नों को पढ़ना नहीं चाहेंगी ? ●

ज़ेहन गंदा कर लेता है। यूं कोरी स्लेट की तरह नन्हें ज़ेहनों पर ग़लत लकीरों के नक़्शे बन जाते हैं। मां-बाप को कुछ होश नहीं रहता कि उनकी ज़िम्मेदारियां क्या हैं। वह मां-बाप की हैसियत से अपने फ़र्ज़ों को पूरा करने में लापरवाही बरतते हैं। पढ़ाई के मामले में सारा ज़ोर इंग्लिश पढ़ाई पर होता है। बहुत हुआ तो क़ुरआने करीम सीख लिया। बाक़ी अहकामात अल्लाह अल्लाह ख़ैर सल्ला। इसी तरह आप औलाद की ख़राब उर्दू और अच्छी अंग्रेज़ी पर फ़ख़्र करके ख़ुद अपनी ज़बान उर्दू को उनकी नज़र में गिरा देते हैं। इसका नतीजा आपके सामने है। बच्चे व नौजवान वेस्टर्न कल्चर में गुम-सुम और अपने इस्लामी व समाजी कल्चर और अदब व आदाब से कोसों दूर बल्कि सिरे से नावाक़िफ़ हैं। रोज़मर्रा की ज़िंदगी भी मां-बाप की बदलते अंदाज़ और ध्यान न देने से असर ले लेती है।

नए ज़माने की माओं ने बच्चों को पुरानी माओं की मोहब्बत व गर्मजोशी से महरूम कर दिया है। आज कल माओं को फ़ैशन व प्रोफ़ेशन के झमेलों से फ़ुरसत नहीं मिलती। इसलिए बच्चों के लिए वक़्त भी नहीं मिलता, सो मासियों पर छोड़-छाड़ कर अपनी लॉइफ़ इंज्वाय करती हैं। कल की माएं तो अब ख़्वाबो ख़्याल की बातें लगती हैं, जिनकी ज़िंदगी का मक़सद ही औलाद की ख़िदमत, राहत, बेहतरीन एजुकेशन व परवरिश और घरदारी हुआ करता था, जो सुबह सवेरे उठकर अपने बच्चों के लिए ताज़ा दही से मक्खन और लस्सी तैयार करतीं थीं। उन्हें गर्म-गर्म रोटी और घी-शकर मिलाकर अपने हाथों से खिलातीं थीं। स्कूल जाते वक़्त भी बच्चों और उनके टीचर तक के लिए घर पर तैयार की गई कई तरह की चीज़ें भी साथ देतीं थीं। शाम को होमवर्क करवातीं थीं और ट्यूशन को तो कोई जानता तक न था। रात को मीठी-मीठी लोरियां और इस्लामी कहानियां व वाक़ेआत सुनातीं थीं। ख़ुद मेरी मां, नानी और दादी वग़ैरा ऐसी ही आईडियल माएं हैं जिन्होंने अपने बच्चों की एजुकेशन व परवरिश के लिए जान लगा दी थी। मेरे ज़ेहन के ख़ानों में आज भी वह धुंधलाई सी तस्वीरें मौजूद हैं। अब भला आज की जान छुड़ाने वाली माएं उन जान क़ुरबान करने वाली माओं के बराबर कैसे हो सकती हैं।

इन हालात और सच्चाईयों को सामने रखें तो फिर शिकायत कैसी कि आज के बच्चे बिगड़ते जा रहे हैं या मां-बाप की इज़्ज़त नहीं करते। वह कहते हैं कि नहीं, इंसान अपना बोया ख़ुद ही काटता है। अगर नन्ही कोंपलों को हिफ़ाज़त व अच्छे पानी से न सींचा जाए तो फ़सल बर्बाद हो जाती है। तो फिर नई नस्ल पर अंधी तन्क़ीद की छुरियां चलाने और ताबड़तोड़ हमले करने से काम नहीं बनेगा बल्कि लापरवाही को रोककर अपनी ज़िम्मेदारियों और फ़र्ज़ों को भी पूरा करना होगा। हालांकि अपने गरेबान में झांकना मुश्किल बल्कि बहुत ही मुश्किल काम है मगर औलाद को अच्छा इंसान बनाने के लिए अपने आपको परखना बहुत ज़रूरी चीज़ है क्योंकि अपनी कमियों और लापरवाहियों से जान छुड़ाकर ही आप अपने मक़सदों व नतीजों को हासिल कर सकती हैं। ●

जीने का मक़सद

■ अनम रिज़वी

जानवर दुनिया में पैदा होते हैं और कुछ साल बाद मर जाते हैं वह अपनी ज़िंदगी मौज-मस्ती से बिताते हैं और उनकी ज़िंदगी इसी तरह बीत जाती है क्योंकि वह जानवर हैं। अब हम बात करते हैं इंसानों की जो दुनिया में आए हैं।

दुनिया में दो तरीक़े के इंसान पाए जाते हैं: एक वह जो दुनिया में आए और चले गए लेकिन उनको याद करने वाला कोई नहीं क्योंकि उन्होंने ऐसा कोई नेक काम नहीं किया जिस से उन्हें दुनिया याद रखे और दूसरे वह जो दुनिया में एक मक़सद लेकर आए और उसे पूरा किया जैसे रसूल, इमाम वग़ैरा। इन लोगों ने अपनी पूरी ज़िंदगी अल्लाह की मर्ज़ी पर गुज़ारी। इनका मक़सद था लोगों को सीधे रास्ते पर लाना। इसके लिए उन्हें बहुत तकलीफ़ों का सामना करना पड़ा यहाँ तक कि ख़ुद को अल्लाह की राह में क़ुर्बान तक करना पड़ा। इमाम हुसैन[अ] ने ज़िंदगी के आख़िरी वक़्त तक ख़ुदा के अहकाम की पैरवी की और हमें दिखा दिया कि अहकाम की पैरवी किस तरह की जाती है। इमाम का मक़सद था 'अम्र बिल मारूफ़ और नहीं अनिल मुनकर' जिसका मतलब है- "अच्छाई की तरफ़ बुलाना और बुराई से रोकना" जिसको पूरा करने के लिए उन्होंने ख़ुदा के हुक्म से जंग की और शहादत पाई और चौदह सौ साल बाद भी उन्हें कोई भूल नहीं पाया और न ही भूल पाएगा।

यह तो हो गई इमाम की बात। अब आते हैं आम ज़िंदगी में जैसे आयतुल्लाह ख़ामेनाई जो कि एक आलिम और मरजा हैं जिन्होंने इस्लाम को बचाने के लिए बहुत कुछ किया है, अपना एक हाथ जंग में खो दिया और आपका एक बेटा ख़ुदा की राह में शहीद हो गया। लेकिन वह डर कर पीछे नहीं हटे बल्कि आज भी वह अपने दीन को बचाने के लिए तैयार हैं। ज़रूरी नहीं कि हमारे मक़सद बड़े ही हों बल्कि कुछ मक़सद छोटे होते हुए भी अच्छे होते हैं जैसे- यतीमों की मदद करना, अंधे को सहारा देना, भूखे को खाना खिलाना, बेवा की मदद करना वग़ैरा। अगर आप ने सुबह में यह मक़सद बनाया कि आज किसी की मदद करना है और शाम तक कई मदद चाहने वालों की मदद की तो वह दिन आपका सबसे अच्छा दिन होगा। दुनिया में कुछ लोग हराम पैसे से अपना बैंक-बैलेंस बढ़ाते हैं और आख़िरत के बैलेंस को घटाते हैं। और कुछ लोग हलाल पैसों से बैंक-बैलेस बढ़ाते हैं लेकिन इस नियत के साथ कि इससे ख़ुम्स निकालेंगे और यतीमों और बेवाओं की मदद करेंगे, किसी ग़रीब बच्चे को तालीम देंगे, बेसहारों को सहारा देंगे जिससे वह दुनिया में कुछ पैसा ख़र्च करके आख़िरत में बहुत कुछ कमा लेंगे।

इस दुनिया में तीन तरह के लोग हैं:- (1) जिनका कोई मक़सद नहीं है। (2) जिनका मक़सद तो है लेकिन उसके कठिन होने की वजह से डरते

अबूज़र के नाम एक ख़त

अबूज़र को एक ख़त मिला। उन्होंने उसे खोलकर पढ़ा। ख़त बहुत दूर से आया था। एक शख़्स ने ख़त के ज़रिए नसीहत चाही थी। वह शख़्स अबूज़र को अच्छी तरह पहचानता था। उसे पता था कि रसूले अकरम[ﷺ] अबूज़र को बहुत चाहते थे और रसूल[ﷺ] से अबूज़र ने इल्म व हिकमत की आला तालीम व तरबियत हासिल की थी।

अबूज़र ने ख़त के जवाब में उस शख़्स को सिर्फ़ एक और बहुत छोटी सी बात लिखी, "अपने सबसे महबूब और अच्छे दोस्त के साथ किसी तरह की कोई बुराई और दुश्मनी मत करो।" यह बात लिखकर अबूज़र ने ख़त का जवाब भेज दिया।

कुछ दिनों बाद नसीहत चाहने वाले शख़्स को अबूज़र का जवाब मिल गया। लेकिन ख़त का मज़मून उसकी समझ से बाहर था। कहने लगा कि आख़िर यह क्या बात लिखी है? इस बात का मतलब क्या है कि जिस को बहुत ज़्यादा चाहते हो उस से दुश्मनी मत करो। आख़िर इसका मतलब क्या है? यह तो बिल्कुल सामने की बात है...इसमें ऐसी कौन सी ख़ास बात है? क्या ऐसा भी हो सकता है कि कोई अपने सबसे अच्छे दोस्त और महबूब के साथ बुराई और दुश्मनी करेगा? बुराई और दुश्मनी तो बहुत बड़ी बात है, आदमी तो अपने महबूब के लिए अपनी जान, अपना माल और सब कुछ कुर्बान कर देता है।

बहरहाल वह शख़्स काफ़ी देर तक ग़ौर करता रहा, वह बार-बार यह सोचने पर मजबूर था कि कहने वाले ने यह बात यूँ ही नहीं कह दी है। इसके अंदर अक़्ल और समझदारी की कोई बात ज़रूर छिपी हुई है। क्योंकि इस बात का लिखने वाला कोई आम आदमी नहीं है बल्कि उसे रसूले इस्लाम[ﷺ] के सबसे क़रीबी सहाबी अबूज़र ने लिखकर भेजा है, जिन्हें इस्लामी उम्मत का लुक़मान कहा जाता है और जिनकी अक़्ल और समझदारी में शक की कोई गुन्जाइश नहीं है। बहरहाल वह शख़्स उस बात का मतलब नहीं समझ सका और बात को सही से समझने के लिए अबूज़र के पास दोबारा ख़त लिखने पर मजबूर हो गया।

अबूज़र ने दोबारा लिखा, "सबसे महबूब शख़्स का मतलब कोई और नहीं बल्कि ख़ुद तुम्हारी ही ज़ात है। तुम तमाम लोगों से ज़्यादा अपनी ज़ात को पसंद करते हो और मैंने जो यह कहा है कि अपने सबसे महबूब दोस्त के साथ किसी तरह की बुराई और दुश्मनी न करो तो इसका मतलब यह है कि ख़ुद अपनी ज़ात के साथ दुश्मनी भरा सुलूक मत करो! शायद तुम्हें नहीं पता कि इन्सान जब कोई गुनाह करता है तो उस गुनाह की वजह से ख़ुद उसकी ज़ात को चोट लगती है और गुनाह के ज़रिए वह अपने ही हाथों अपने आपको नुक़सान पहुँचाता है।

हैं कि वह पूरा नहीं कर पाएंगे। (3) वह जिनका मक़सद भी है और पूरा करने की चाह भी।

अब यह आपको पता करना है कि आप किस तरह के लोगों में आते हैं।

मैं एक वाक़िआ बताना चाहती हूँ- एक आलिम थे जिन्होंने ख़्वाब देखा कि जन्नत में उनका एक बेहतरीन घर है और उनके घर के पास एक और उनके ही जैसा आलीशान घर है। उन्होंने पूछा कि यह घर किसका है तो पता चला कि यह घर फ़ुलां शख़्स का है। इतने में उनकी आँख खुल गई। फिर आलिम ने उस शख़्स का पता लगाया तो मालूम हुआ कि वह शख़्स एक आम ड्राइवर है। आलिम ने उस से पूछा कि तुम कौन सा नेक काम करते हो? ड्राइवर ने बहुत सोचा और कहा कि वह ख़ुदा के अहकाम को बजा लाने के अलावा ऐसा कोई ख़ास नेक काम नहीं करता जिससे उसे जन्नत में इतना आलीशान घर मिल जाए। बस वह सुबह इस मक़सद के साथ निकलता है कि हर मुसाफ़िर को उसकी मंज़िल तक पहुँचा दे।

अब ज़रा सोचिए कि जब एक छोटा सा नेक काम जन्नत में एक आलिम के जितना आलीशान घर दिला सकता है तो क्यों न हम भी अपनी ज़िंदगी का एक नेक मक़सद बनाएं और उसे न कर पाने के डर से पीछे न हटें बल्कि कोशिश करते रहें क्योंकि यह कोई मुश्किल काम नहीं है। लोग कहते हैं कि नेक अमल का क्या फ़ायदा क्योंकि वह दुनियावी फ़ाएदा देख रहे होते हैं, आख़िरत का नहीं। हर इंसान की ज़िंदगी में एक मक़सद होना चाहिए और उसे पूरा करने की चाह भी। मक़सद को कभी छोटा या बड़ा नहीं समझना चाहिए। बस कोशिश करते रहें क्योंकि दुनिया में हर रोज़ न जाने कितने बच्चे पैदा होते हैं लेकिन कुछ ही ऐसे होते हैं जो बड़े होकर अपना और अपने माँ-बाप का नाम रौशन करते हैं और उनके मरने के बाद भी लोग उन्हें याद करते हैं। इसलिए हमें भी अपनी ज़िंदगी में एक नेक मक़सद बनाना चाहिए ताकि मरने के बाद लोग हमें भूल न सकें और हमेशा याद रखें। हमें अपनी ज़िंदगी के वाजिबात के साथ-साथ कोई ऐसा नेक अमल भी करना चाहिए जो आख़िरत में हमारा साथ दे और हमारी रूहानी ताक़त में इज़ाफ़ा करे। अगर हम ने ऐसा कर लिया तो ख़ुदा की दी हुई ज़िंदगी का मक़सद पूरा हो जाएगा। हमें सभी से मोहब्बत से पेश आना चाहिए क्योंकि ख़ुदा को यह बात बेहद पसंद है कि बंदा उसकी मख़लूक़ से मोहब्बत करे। ख़ुदा करे कि हम अपनी ज़िंदगी को एक नेक मक़सद के साथ जिएं और उसे पूरा करने में कामयाब हों।

लोग जितना जानते हैं उतने ही पर अमल कर लें तो सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मरहूम आयतुल्लाह बेहजत

इंतेज़ार

इमामे ज़माना[अ०] का ज़ुहूर ख़ुदा के न बदलने वाले फ़ैसलों में से है। क्योंकि ख़ुदा ने इस दुनिया को बुलंदी और कमाल तक पहुँचने के लिए बनाया है जैसा कि क़ुरआन कह रहा है, ''मैं ने जिन्न और इन्सानों को इसीलिए पैदा किया है ताकि वह मेरी बंदगी करें''। ज़िंदगी के हर मैदान में ख़ुदा की बंदगी वह आख़िरी कमाल और बुलंदी है जिसके लिए ख़ुदा ने इंसानों को बनाया है और अगर यह दुनिया ज़ुल्म और नाइंसाफ़ी पर ख़त्म हो जाए तो दुनिया का मक़सद ही पूरा नहीं होगा।

आख़िरी इमाम को ज़ुहूर के बाद पूरी दुनिया में ख़ुदा की बन्दगी का परचम लहराना होगा। अगर किसी मुल्क में कोई चेंज लाना हो तो लोगों को उसके लिए तैयारी करना पड़ती है। अगर कोई मुल्क किसी दूसरे मुल्क का गुलाम हो या उस मुल्क में डिक्टेटरशिप चल रही हो और लोग अपने मुल्क को आज़ाद कराना चाहते हों तो उसके लिए उन्हें कितनी तैयारी करना होती है, अपने आप को बदलना होता है, जैसे हालात होते हैं उसके हिसाब से वह इन्क़ेलाब लाने की कोशिश करते हैं। अगर मुल्क को आज़ाद कराने के लिए हथियारों की ज़रूरत होती है तो वह हथियार इस्तेमाल करते हैं, अगर क़ुर्बानी देने की ज़रूरत होती है तो वह क़ुर्बानी देते हैं, लेकिन ऐसा नहीं होता कि वह अचानक क़ुर्बानी देने के लिए तैयार हो जाएं बल्कि इसके लिए उन्हें कई सालों तक कोशिश करना होती है। जितना बड़ा इन्क़ेलाब होता है उतने ही साल उसकी तैयारी में लगते हैं, लोगों को अपने आपको बदलना होता है, अपनी सोच को चेंज करना होता है, अपना कैरेक्टर चेंज करना होता है तब कहीं वह मुल्क के लिए अपनी क़ुर्बानी देने के लिए तैयार हो जाते हैं वरना जो लोग अपनी ज़िंदगी में मस्त-मगन रहते हैं उन्हें इसकी फ़िक्र ही नहीं होती है कि वह गुलाम हैं और अगर वह समझते भी हैं तब भी वह अपने आपको गुलामी से आज़ाद कराने के लिए कोशिश नहीं करते हैं क्योंकि इसके लिए उन्हें अपने आपको बदलना होगा, अपनी ज़िंदगी में एक चेंज लाना होगा, जिस ऐश व आराम को वह अच्छा समझ रहे हैं उसे छोड़ना होगा लेकिन वह यह सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते हैं। इसकी वजह यह है कि उन्हें आज़ादी की क़ीमत नहीं मालूम होती। वह गुलामी में रहकर थोड़े बहुत ऐश व आराम को अच्छा समझते हैं और उसी में ख़ुश रहते हैं। मगर जो लोग जानते हैं कि आज़ादी क्या होती है वह इसके लिए कोशिश करते हैं और फिर उनके लिए अपनी ज़िंदगी बदलना और ऐश व आराम छोड़ना आसान हो जाता है।

इमामे ज़माना[अ०] किसी एक मुल्क को नहीं बल्कि इस पूरी दुनिया को ज़ालिम और डिक्टेटर लीडरों से आज़ाद कराने के लिए आएंगे, पूरी दुनिया को ज़ुल्म और शिर्क की गुलामी से निजात दिलाने के लिए आएंगे जिसके लिए वह ज़िंदगी के हर मैदान में चेंजेस और तबदीलियाँ लाएंगे। यह

तो बिल्कुल सामने की बात है कि पूरी दुनिया को बदलने वाला यह अज़ीम इंक़ेलाब अचानक नहीं आ जाएगा बल्कि इसके लिए उन लोगों को तैयारी करना होगी जो इस इंक़ेलाब में इमाम[अ०] का साथ देना चाहते हैं और इमाम[अ०] के दुश्मनों के लश्कर में नहीं बल्कि इमाम[अ०] के लश्कर में रहना चाहते हैं और हमेशा यह दुआ करते रहते हैं कि ख़ुदाया! हमें इमाम[अ०] के मददगारों में शामिल कर दे।

पूरी दुनिया को बदलने वाले इस इंक़ेलाब के लिए बहुत सी शर्तें हैं जिन्हें हम यहाँ पर पेश कर रहे हैं:

1- पर्सनल तैयारी

जैसा कि हम ने ऊपर कहा कि कोई भी बाहरी इंक़ेलाब अन्दुरूनी इंक़ेलाब के बाद ही आता है। जब तक ख़ुद इन्सान के अंदर कोई बदलाव न हो तब तक वह बाहर की दुनिया में कोई बदलाव नहीं ला सकता। जब तक लोगों के सोचने का अंदाज़ और किरदार न बदल जाए तब तक वह इस दुनिया में कुछ भी नहीं बदल सकते। दुनिया में जितने लोग इंक़ेलाब लाए हैं या उन्होंने बड़े चेंजेस और तबदीलियाँ की हैं और जिन लोगों ने उनका साथ दिया है हम उन्हें देख सकते हैं कि पहले उन्होंने अपने आपको बदला है, वह अपने अंदर एक इंक़ेलाब लाए हैं और फिर वह बाहर की दुनिया में इंक़ेलाब लाने में कामयाब रहे हैं।

पर्सनल तैयारी का मतलब सिर्फ़ यह नहीं होता कि आदमी अपने किरदार को अच्छा बना ले, नमाज़ें पढ़े, दुआएं पढ़े और गुनाहों से दूर रहे बल्कि जैसा इंक़ेलाब होता है उसके लिए वैसी ही तैयारी करना होती है। इमाम[अ०] पूरी दुनिया के सिस्टम को बदलेंगे और उस सिस्टम में ज़ालिम और गुनाहगार लोगों की जगह नेक किरदार इंसानों को लाएंगे लेकिन यह लोग ऐसे नहीं होंगे जो सिर्फ़ मस्जिद में बैठकर इबादत करना जानते हों बल्कि यह दुनिया का सिस्टम चलाने की सलाहियत रखते होंगे। यह ख़ुदा की बंदगी करेंगे लेकिन सिर्फ़ मस्जिद में नहीं बल्कि ज़िंदगी के हर मैदान में।

2- लोगों का ज़हनी तौर पर तैय्यार रहना

यानी लोगों की सोच इतनी बुलंद हो जाए कि वह रंग, नस्ल, क़ौम और मुल्क का फ़र्क़ भूल जाएं और किसी ऐसे आदमी की बात मानने की सलाहियत रखते हों जो न उनके रंग और नस्ल का है और न उनके मुल्क का लेकिन वह सच्चाई और इंसाफ़ की तरफ़ बुलाने वाला है इसलिए लोग उसकी बात मानने पर तैयार हों।

3- समाजी तैयारी

लोग ज़ुल्म और नाइंसाफ़ी करने वाली हुकूमतों और इन्सानों का ख़ून चूसने वाले सिस्टम से इतने परेशान और थक चुके हों कि वह सब किसी निजात देने वाले की तरफ़ आँख लगाए बैठे हों। वह यह समझ गए हों कि अब दुनिया के यह सिस्टम्स उन्हें अच्छी ज़िंदगी नहीं दे सकते हैं। न उन्हें इस दुनिया में सुकून दे सकते हैं और न आख़िरत की ज़िंदगी के लिए कुछ कर सकते हैं। इसलिए उन्हें किसी ऐसे आदमी का इंतेज़ार होगा जो ख़ुदा की तरफ़ से आए और उन्हें इस दुनिया और आख़िरत की वह सारी नेमतें दे जिनकी वह हमेशा आरज़ू करते रहे हैं।

इस से पता चलता है कि इमामे ज़माना[अ०] के ज़ुहूर की दुआ माँगने वालों की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ यह नहीं है कि वह अपने आपको अच्छा बनाएं बल्कि उनकी ज़िम्मेदारी यह भी है कि वह अपने समाज को अच्छा बनाने की कोशिश करें, लोगों को ज़ालिम हुकूमतों के ज़ुल्म के बारे में बताएं, उनमें ज़ालिमों से नफ़रत और उन से मुक़ाबला करने की हिम्मत पैदा करें। वरना ज़ालिमों के ज़ुल्म के सामने ख़ामोश बैठकर इमाम के ज़ुहूर की दुआ करना कहीं से कहीं तक सही नहीं है। बल्कि ज़ालिमों की मुख़ालेफ़त इमामे ज़माना[अ०] की हिमायत है।

जब हम यह तीनों चीज़ें समझ जाएंगे तब हमें मालूम होगा कि रिवायतों में 'इंतेज़ार' पर इतना ज़ोर क्यों दिया गया है और यह क्यों कहा गया है कि इंतेज़ार सबसे बड़ा अमल है। यानी इंतेज़ार अमल करने का नाम है,ख़ामोश बैठ जाने का नहीं।

عليه السلام

क्या आप जानती हैं...?

■ सै. अमीन हैदर हुसैनी

सवाल (1) इमामे ज़माना[अ॰] कौन हैं? आप कब और कहां पैदा हुए?

जवाब- इमामे ज़माना[अ॰] शियों के बारहवें इमाम हैं। आप 15 शाबान सन् 255 हिजरी को इराक़ के शहर सामरा में पैदा हुए।

सवाल (2) आपके वालिद और वालिदा का नाम क्या है?

जवाब- आपके वालिद शियों के ग्यारहवें इमाम, हज़रत इमाम हसन असकरी[अ॰] और आपकी वालिदा जनाबे नरजिस ख़ातून हैं।

सवाल (3) आपके वालिद को किसने और कब शहीद किया और वह कहां दफ़न हैं?

जवाब- आपके वालिद को 8 रबीउल अव्वल सन् 260 हिजरी में ज़ालिम बादशाह मोतमिद अब्बासी ने शहीद किया। आपकी क़ब्र इराक़ के शहर सामरा में है।

सवाल (4) आपका नाम और आपकी कुन्नियत क्या है?

जवाब- आपका नाम पैग़म्बरे अकरम[स॰] के नाम पर है यानी मुहम्मद और आपकी कुन्नियत भी पैग़म्बरे अकरम[स॰] की कुन्नियत है यानी अबुल क़ासिम।

सवाल (5) इमामे ज़माना[अ॰] के लक़ब क्या-क्या हैं?

जवाब- आपके अलक़ाब क़ायम, हुज्जत, साहिबुज़्ज़मान, बक़ीयतुल्लाह, मुन्तज़र, ख़लफ़े सालेह, साहिबुल अम्र, मुन्तक़िम वग़ैरह हैं।

सवाल (6) अपने वालिद हज़रत इमाम हसन असकरी[अ॰] की शहादत के वक़्त आपकी कितनी उम्र थी?

जवाब- जिस वक़्त आपके वालिद की शहादत हुई उस वक़्त आपकी उम्र क़रीब पांच साल की थी।

सवाल (7) क्या पांच साल का बच्चा इमाम बन सकता है?

जवाब- हां! पांच साल का बच्चा इमाम बन सकता है। क़ुरआने करीम में है कि हज़रत ईसा[अ॰] और हज़रते यहया[अ॰] को अल्लाह ने बचपने ही में नबुव्वत दी थी।

जब हज़रत ईसा[अ॰] पैग़म्बर हुए तो लोगों से फ़रमाया, ''मैं ख़ुदा का बंदा हूं। उसने मुझे किताब दी है और मुझे नबी बनाया है।'' (1)

इसी तरह जब हज़रत यहया[अ॰] नबी हुए तो ख़ुदा ने उनसे फ़रमाया, ''ऐ यहया! किताब को मज़बूती से पकड़ लो और हमने उन्हें बचपने ही में नबुव्वत दे दी।'' (2)

इसीलिए जब एक बच्चा ख़ुदा की इजाज़त से नबी बन सकता है तो हमारे इमाम भी उसकी इजाज़त से पांच साल की उम्र में इमाम बन सकते हैं। ख़ुदा के यहां उम्र की कोई क़ैद नहीं होती है क्योंकि वह बेहतर जानता है कि कौन नबी और इमाम बनने की सलाहियत रखता है और कौन इस मुक़द्दस ओहदे का हक़दार है।

सवाल (8) अरबी डिक्शनरी में ग़ैबत के क्या मायने हैं?

जवाब- अरबी डिक्शनरी में ग़ैबत के मायने नज़रों से ग़ायब और ओझल होने के हैं। इमामे ज़माना[अ॰] इस दुनिया में मौजूद हैं, सिर्फ़ हमारी नज़रों के सामने से ग़ायब हैं और हम उनको देख नहीं पाते हैं।

सवाल (9) ग़ैबत कितनी तरह की होती है?

जवाब- ग़ैबत दो क़िस्म की होती है। पहली ग़ैबत को 'ग़ैबते सुग़रा' यानी छोटी ग़ैबत और दूसरी ग़ैबत को 'ग़ैबते कुबरा' यानी बड़ी ग़ैबत कहते हैं।

सवाल (10) पहली ग़ैबत यानी ग़ैबते सुग़रा कब से शुरू हुई और कब तक जारी रही?

जवाब- पहली ग़ैबत सन् 260 हिजरी से शुरू होकर सन् 329 हिजरी तक जारी रही। यानी क़रीब 69 साल तक चली।

सवाल (11) दूसरी ग़ैबत यानि ग़ैबते कुबरा कब से शुरू हुई और कब तक जारी रहेगी?

जवाब- दूसरी ग़ैबत इमामे ज़माना[अ] के चौथे नुमाइंदे 'अबुल हसन अली इब्ने मुहम्मद समरी' के इंतेक़ाल के बाद से शुरू हुई जिनका इंतेक़ाल सन् 329 हिजरी में हुआ था। और यह ग़ैबत कब तक जारी रहेगी इसका इल्म ख़ुदा के अलावा किसी को नहीं है। वह जब मसलेहत समझेगा तब इमाम का ज़ुहूर हो जाएगा।

सवाल (12) पहली ग़ैबत में इमामे ज़माना[अ] के कितने नुमाइंदे थे ओर उनके क्या नाम थे?

जवाब- पहली ग़ैबत में इमाम के चार नुमाइंदे थे जिनके नाम तरतीब से यह हैं:- 1-अबू अम्र उस्मान बिन सईद अमरी, 2-अबु जाफ़र मुहम्मद बिन उस्मान बिन सईद अमरी, 3-अबुल क़ासिम हुसैन बिन रोहे नौबख़्ती, 4-अबुल हसन अली बिन मुहम्मद समरी।

सवाल (13) क्या इमाम पहली ग़ैबत के दौरान लोगों से मिलते-जुलते थे?

जवाब- पहली ग़ैबत जो क़रीब 69 साल तक चली इसमें इमाम के चार नुमाइंदे थे जिनका इमाम से सीधे मिलना-जुलना था। उनके अलावा कुछ ख़ास लोगों से भी इमाम मुलाक़ात किया करते थे।

सवाल (14) इमाम के नुमाइंदों के क्या काम थे और उनके ऊपर कौन-कौन सी ज़िम्मेदारियां थीं?

जवाब- ग़ैबते सुग़रा में आपके नुमाइंदों की ज़िम्मेदारियां बहुत ही अहम थीं। वैसे तो बहुत सी ज़िम्मेदारियां थीं लेकिन हम यहां कुछ को पेश कर रहे हैं:- 1- इमाम के वुजुद के बारे में लोगों के शकों को दूर करना। 2- इमाम को दुश्मनों से महफ़ूज़ रखने के लिए उनके नाम और उनके रहने की जगह को लोगों से छुपाना। 3- लोगों की बातों को इमाम तक पहुंचाना और उसका जवाब हासिल करना। 4- अहकाम से मुताल्लिक़ सवालों का जवाब देना और अक़ीदती मुश्किलों को हल करना। 5- इमाम से मुताल्लिक़ माल को लेना और उसे तक़सीम करना। 6- इमामे ज़माना का झूठा दावा करने वाले लोगों से मुक़ाबला करना और उनके इस झूठे दावे को रिजेक्ट करना। 7- लोगों को दूसरी ग़ैबत यानि ग़ैबते कुबरा के लिए तैय्यार करना वग़ैरह।

सवाल (15) क्या ग़ैबत सिर्फ़ इमामे ज़माना[अ] के लिए है?

जवाब- नहीं! ग़ैबत सिर्फ़ हमारे इमाम ही के लिए नहीं है बल्कि दूसरे नबियों ने भी ग़ैबत की है और एक ज़माने तक अपनी क़ौम के बीच से ग़ायब रहे हैं। इस सिलसिले में हम क़ुरआन और हदीस से नमूने के तौर पर कुछ दलीलें पेश कर रहे हैं :-

1- हज़रत यूसुफ़[अ] क़रीब बीस साल से ज़्यादा अपने घर वालों से दूर रहे। आप मिस्र में रह रहे थे और जब ख़ुदा का हुक्म आया तो घर वापस लौटे।

2- हज़रत मूसा[अ] ने भी ग़ैबत की है। आप भी एक मुद्दत तक क़ौम के बीच से ग़ायब रहे। इस बारे में इमाम इमाम जाफ़र सादिक़[अ] फ़रमाते हैं, "हमारा क़ायम हज़रत मूसा[अ] से इस वजह से शबाहत रखता है कि उसकी पैदाइश और ग़ैबत का भी लोगों को इल्म नहीं होगा।"

3- हज़रत सालेह[अ] बहुत दिनों तक अपनी क़ौम के बीच से ग़ायब रहे और जब लौटे तो लोग उन्हें पहचान न पाए। लेकिन जब लोगों ने उन्हें एक नबी की शक्ल में देखा तो पहचान गए।

सवाल (16) क्या एक आदमी हज़ार साल से ज़्यादा ज़िन्दा रह सकता है?

जवाब- रिसर्च और साइंस के ज़रिए यह बात साबित हो चुकी है कि लम्बी ज़िन्दगी नामुमकिन और मुहाल चीज़ नहीं है और जब मुहाल और नामुमकिन नहीं है तो अगर ख़ुदा चाहे तो एक इंसान सौ साल क्या हज़ार साल तक ज़िन्दा रह सकता है।

इस्लामी हिस्ट्री के मुताबिक़ हज़रत ईसा[अ], हज़रत इलयास[अ] और हज़रत ख़िज़्र[अ] जैसे नबी अब तक ज़िंदा हैं। क़ुरआन के मुताबिक़ हज़रत नूह[अ] 950 साल तक ज़िंदा रहे और इसी तरह हदीसों में मिलता है कि हज़रत सुलेमान[अ] 712 और हज़रत लुक़मान[अ] 400 साल तक ज़िन्दा रहे।

सवाल (17) क्या हमारे आख़िरी नबी[स] ने इमामे ज़माना के बारे में कुछ फ़रमाया है?

जवाब- शिया और सुन्नी दोनों की किताबों में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स] से इमामे ज़माना[अ] के बारे में बहुत सी हदीसें पाई जाती हैं। इन हदीसों में इमाम के ज़ुहूर और उनकी ख़ुसूसियत और ख़ानदान के बारे में बताया गया है। इन हदीसों की स्टडी करने के बाद एक हक़ पसंद के लिए किसी भी तरह के शक की गुंजाइश नहीं है। हम यहां एक हदीस को नमूने के तौर पर पेश कर रहे हैं।

रसूले अकरम[स] फ़रमाते हैं, "मेहदी मेरे बेटों में से है उसका नाम (मुहम्मद) मेरे नाम पर है उसकी कुन्नियत (अबुल क़ासिम) मेरी कुन्नियत है।"

1-सूरए मरयम/30, 2- सूरए मरयम/12

जो कभी न बुझे वह चिराग़

■ इंजीनियर हसन रज़ा नक़वी

मौहर्रम और अय्यामे अज़ा का ज़माना अभी जल्दी ही ख़त्म हुआ है इसलिए दिल चाहा कि इस बार के आर्टिकिल को इसी सांचे में ढाल कर लिखा जाए।

पिछले इशूज़ में जैसा कि मैं कई बार अलग-अलग तरीक़े से यह बता चुका हूँ कि इल्म अगर इन्सान बनाने के लिए हासिल किया जाए तो वह दुनिया और आख़िरत दोनों को संवारता है और अगर रोज़ी कमाने के लिए ही हासिल किया जाए तो वह समाज के लिए भी मुसीबत बन जाता है और आख़िरत तो बरबाद हो ही जाती है। यानी Education तब कमाल पर पहुँचती है जब Moral Education के साथ हो, कभी-कभी बातें दोहराते रहना उसी तरह ज़रूरी है जैसे किसी फ़न और स्किल को परफ़ैक्शन तक पहुँचाने के लिए उसकी बार-बार Practice की जाती है, तब वह निखरता है। ख़ुदा भी क़ुरआने मजीद में कई बार एक ही बात को अलग-अलग अंदाज़ से बयान करता है और वह भी नई-नई मिसालों के साथ।

दुनिया का हर इन्सान अपनी ज़िंदगी में कुछ हासिल करना चाहता है और उसे हासिल करने की कुछ ज़रूरतें यानी डिमांड्स होती हैं और कुछ ख़ास वक़्त होते हैं। हम जिस Topic को लेकर चल रहे हैं और इस वक़्त जिस उम्र (13-19 साल) का ज़िक्र चल रहा है वही इन दोनों बातों के लिए Ideal age है। वक़्त सबसे अच्छा वह है जब इन्सान जो करना चाहता है उसके लिए हर तरफ़ से आसानियाँ हों यानी पैसा हो जो माँ-बाप ख़ुद को बेच कर ख़र्च करने को तैयार रहते हैं, सेहत हो जो माँ-बाप ख़ुद भूके रह कर अपनी औलाद को देने को तैयार रहते हैं, ख़ुद पर भरोसा हो जिसके लिए जवानी से अच्छा और कोई मौक़ा नहीं हो सकता, ताक़त हो जो इसी उम्र में सबसे ज़्यादा होती है और किसी काम को बिना थकन का एहसास किए देर तक कर सकने को Stamina कहते हैं, वह भी इसी उम्र में सबसे ज़्यादा होता है।

दूसरी चीज़ होती है तक़ाज़े यानी पहले क्या करना है, वह तय कीजिए। फिर कैसे करना है वह तय कीजिए तभी कुछ मिलेगा।

इसकी मिसाल यह है कि आपको कहाँ जाना है यह आप चौक चौराहे पर खड़े होकर सोचते हैं। फिर जब तय कर लेते हैं कि हज़रतगंज जाना है तो उसके तक़ाज़े पूरे करते हैं। वक़्त चाहिए, सवारी चाहिए, रास्ता पता होना चाहिए या कम से कम हज़रतगंज में कहाँ उतरना है मालूम होना चाहिए, जहाँ जाना है उसी हिसाब से लिबास (Dress-up) हो और वहाँ पहुँच कर क्या करना है वह पहले से तय हो वग़ैरा-वग़ैरा।

यह सब बातें किताबों से हटकर ही आदमी समझ सकता है। किताबों में उन लोगों के ज़िक्र मिलेंगे जिन्होंने बड़े-बड़े कारनामे किए हैं और जो-जो करते रहे वह मिलेगा मगर उसे प्लान कैसे किया यह कम मिलेगा। यह आपको ढूँढना

होगा और इसी को Reading Between the Lines कहते हैं। यह हुनर कि जो नहीं लिखा है वह समझ में आ जाए इसके लिए पन्द्रह साल की उम्र के बाद से Practice शुरु हो जानी चाहिए। इसका तरीक़ा है, 'What', 'Why' और 'How' यह तीनों सवाल पढ़ाई के दौरान Teachers भी पसंद करते हैं और दीन का इक़रार करने से पहले अल्लाह भी पसंद करता है।

इसकी सब से आसान मिसाल यह है कि आप इमाम हुसैन[अ] को Directly करबला में मत देखिए बल्कि जो करबला में हो रहा है वह क्यों हो रहा है, वह कैसे हो रहा है और वह क्या हो रहा है यह समझिए। तब आप ख़ुद ही Perfect Personality को Develop कर पाएंगे। इन सवालों के बिना मजलिस में बैठना वैसे ही होगा जैसे किताब सामने रखी है मगर पढ़ना कुछ नहीं। रही सवाब की बात तो मजलिस में बैठना वैसा ही सवाब है जैसे क़ुरआन पर नज़र डालना। अब यह देखना होगा कि हुसैन आपको सिर्फ़ सवाब दिलाना चाहते हैं या कुछ और भी चाहते हैं। यह आप गाँधी जी से समझ सकते हैं। गाँधी जी हर जगह अपनी तस्वीरें और अपनी मूर्तियाँ लगवाना चाहते थे या इन्सान को आज़ादी से जीने का हुनर सिखाना चाहते थे। आप कहेंगे कि तस्वीरें लगाना और उन पर लिखना हमारी उन से मोहब्बत है और उनके मक़सद को समझना देशभक्ति है। और इसीलिए हम उनके काम को Achievement समझते हैं।

अब गाँधी जी से पूछिए कि उन्होंने यह सब कहाँ से सीखा तो वह कहेंगे हुसैन[अ] से। वैसे हुसैन[अ] के सारे Programmes से उनको मोहब्बत है मगर उन्होंने जो कुछ किया उसका मक़सद समझना ही इन्सानियत पर चलना है।

यह Magazine सिर्फ़ किसी एक Community में नहीं पढ़ी जाती। इसलिए यह कहना भी ज़रूरी है कि हमें हुसैन[अ] को सिर्फ़ शियों का समझ कर नहीं छोड़ देना चाहिए बल्कि हुसैन[अ] को एक बेहतरीन और समझदार इन्सान समझ कर उन से कुछ सीखना चाहिए। क्योंकि अपनी-अपनी Qualities के साथ हर क़ौम के पास बहुत प्यारे-प्यारे लोग हैं मगर इन्सानियत की सारी Qualities के साथ सबके पास बस हुसैन[अ] हैं। इसीलिए दुनिया के सारे बड़े-बड़े और बा-कमाल लोगों ने ख़ुद को हुसैन[अ] से ज़रूर जोड़ा है। अगर हमारे जवान भी हुसैन[अ] से उस तरह जुड़ गए जिस तरह हुसैन[अ] चाहते हैं तो हमारी आने वाली Generation दुनिया की एक अज़ीम Society बना सकती है और दुनिया को Global Syndicate नहीं बल्कि Global Human Values के ख़्वाब को सच्चाई में बदल सकती है।

जवानों से: आप जितनी भी दौलत कमा लीजिए अगर ज़हनी सुकून नहीं है तो सारी दौलत दवाओं पर ख़र्च हो जाएगी और सारा वक़्त दौड़ते-दोड़ते निकल जाएगा। इसलिए इस ज़हनी सुकून को पाने के लिए दुनिया के और लीडरों के साथ-साथ रूहानी (Spiritual) लीडर्स को भी समझने की कोशिश कीजिए और अपने से बेहतर लोगों से उनके बारे में ज़रूर पूछा कीजिए...

बुज़ुर्गों से: पैरेंट्स इमाम हुसैन[अ] की मुसीबतें बयान करने के साथ-साथ यह भी बताएं कि इमाम ने यह मुसीबतें क्यों उठाई थीं, वह कौन सा मक़सद था जिसे हासिल करने के लिए हुसैन[अ] ने ख़ुद को मिटाना ज़रूरी समझा, मक़सद हासिल हुआ भी या नहीं। मक़सद हासिल करने में किस तरह मदद मिली, वह मक़सद कब तक के लिए था, किस-किस के लिए था, किस-किस ने उसे पा लिया और किस ने खो दिया। जिसने पाया वह फ़ाएदे में रहा या खोने वाला, फ़ाएदा किसे कहते हैं और यह सारे सवाल हल करना आज भी किसकी ज़िम्मेदारी है??... ज़रूर बताईए वरना एक और हुसैन[अ] का आना क़यामत से कम न होगा!

HK

KAZIM
Zari Art

All Kinds of
Sarees, Suits
& Lehanga Chunri

Hata Dhannu Beg
Kazmain Road Lucknow
Contact No.
0522-2264357, 9839126005
8687926005

अख़बार की एक ख़बर से मुतास्सिर होकर

जहेज़ की बे-तहाशा माँग का रिएक्शन

■ डॉ. पैकर जाफ़री

फ़ैसला

गुफ़्तगू शब की जो सुन ली तो यह बेटी ने कहा
बोझ माँ-बाप के सर का मैं करूँगी हलका
माँग नौशाह के घर की है कि तौबा-तौबा
लालच इस तरह से ज़र की है कि तौबा-तौबा
इन सवालों का यूँही देना है तेवर से जवाब
जैसे देता है कोई ईंट का पत्थर से जवाब
अब तो इंसाँ से नहीं, होगी अजल से शादी
एक सबक़ देगी ज़माने को मेरी बर्बादी
मौत हो ज़ीस्त, कुछ इस तरह मनाएं शादी
ख़ुद को कुर्बान करें और रचाएं शादी

(2)

ख़ुदकुशी करके मैं आज़ाद हुई हूँ अम्माँ
सर से एक बोझ हटा, शाद हुई हूँ अम्माँ

(3)

आप सब मौत से मेरी न हों हैरानो मलूल
सुर्ख़ जोड़े पे मेरे डाल दें अरमान के फूल
सुर्ख़ चादर में मेरी लाश को कफ़ना देना
हसरतो यास से बस क़ब्र में दफ़ना देना
मेरे सोएम में! शकर और छुहारे बाटें
मेरी सखियों ही में सब कपड़े हमारे बाटें
कोई पूछे तो बताएं कि गई हूँ ससुराल
वापसी का कोई मालूम नहीं है अहवाल

■ सै. आले हाशिम रिज़वी
युनिटी मिशन स्कूल, लखनऊ

2 क़दम 2 घूँट 2 बूंद

हज़रत अली[अ॰] ने अपने इरशादात और ख़ुतबों में कई बार दुनिया को बहुत बुरा कहा है। नहजुल बलाग़ा में मौला अली[अ॰] के ऐसे कई इरशाद और ख़ुतबे मिल जाएंगे जिसमें उन्होंने दुनिया के सिलसिले में अपने इस ख़याल को पेश किया है कि उन्हें दुनिया बिल्कुल पसंद नहीं है। नहजुल बलाग़ा के ख़ुतबा/111 में इमाम[अ॰] फ़रमाते हैं कि दुनिया ऐसे शख़्स की मंज़िल है जिसके लिए क़रार नहीं है और यह धोखा देती है। यह एक ऐसा घर है जो अपने रब की नज़रों में ज़लील है। इस दुनिया में बुराइयाँ बहुत ज़्यादा और अच्छाइयाँ बहुत कम हैं। इसी तरह ख़ुतबा/223 में इमाम[अ॰] फ़रमाते हैं कि यह दुनिया बलाओं से घिरी और फ़रेब से भरी हुई है। ख़ुतबा/97 में तो आपने दुनिया को छोड़ देने की वसीयत तक कर दी है। ख़ुतबा/32 में भी आपने दुनिया को बहुत बुरा कहा है। एक बार किसी सहाबी के सामने जब हज़रत अली[अ॰] ने दुनिया को अपने लिए मरे हुए जानवर के जैसा बताया तो उस सहाबी ने पूछ लिया कि मौला! आप हमेशा दुनिया को अपनी नापसंदीदा जगह बताते हैं, क्या आपको दुनिया की कोई चीज़ पसंद नहीं है? इस सवाल को सुनकर इमाम अली[अ॰] ने जवाब दिया कि मुझे इस दुनिया की 6 चीज़ें बहुत पसंद हैं। यह सुनकर उस सहाबी ने हैरानी से पूछा कि मौला! वह 6 चीज़ें कौन सी हैं? हज़रत अली[अ॰] ने इस सवाल का जवाब बड़े ही अजीब अंदाज़ में दिया। **इमाम[अ॰] ने फ़रमाया कि मुझे इस दुनिया में दो क़दम, दो घूंट और दो बूँद बहुत पसंद हैं।** सहाबी इस जवाब को समझ नहीं सका तो इमाम ने उसे समझाते हुए फ़रमाया, "दो क़दम वह हैं जिसमें पहला किसी इबादत को अंजाम देने के लिए उठाया जाए और दूसरा क़दम वह जो किसी रिश्तेदार या दोस्त की ख़ैरियत जानने और उससे मिलने के लिए उठाया जाता है।" आइए पहले इन दो क़दमों के बारे में बात करते हैं। जब हम नमाज़, रोज़ा या हज वग़ैरा किसी इबादत के इरादे से अपने क़दम उठाते हैं तो हमारे हर क़दम पर हमको ख़ुदा की तरफ़ से सवाब मिलता है। ज़ाहिर है ऐसा क़दम जो हम अल्लाह की इबादत के लिए उठाते हैं वह हज़रत अली[अ॰] को पसंद आना ज़रूरी है। इमाम[अ॰] ने हमारे जिस दूसरे क़दम को पसंद किया है वह किसी रिश्तेदार या दोस्त से मिलने के लिए उठाया गया क़दम है। इमाम अली[अ॰] की नज़र में रिश्तेदारों और दोस्तों के बीच बेहतर रिलेशन और प्यार-मोहब्बत की बहुत अहमियत है। रिलेशन तभी मज़बूत बनते हैं जब हम एक-दूसरे से मिलते-जुलते रहते हैं। एक दूसरे की ख़ैरियत और हाल-चाल जानना हमारा अख़लाक़ी फ़रीज़ा है। यह अलग बात है कि आज के दौर में जब हर इन्सान दौलत, शोहरत और तरक़्क़ी हासिल करने की फ़िराक़ में बहुत बिज़ी रहता है तो ऐसे में रिश्तेदारों और दोस्तों वग़ैरा से मिलने का टाइम निकालना वह ग़ैर ज़रूरी समझता है। जबकि यह उसकी नासमझी है। रिश्तेदारों और दोस्तों की हमारी ज़िंदगी में बहुत अहमियत होती है। जब हम एक-दूसरे से मुलाक़ात करते हैं तो हमारी बहुत सी प्रॉब्लम्स भी दूर हो जाती हैं।

हज़रत अली[अ॰] ने अपने पसंदीदा दो घूँट के सिलसिले में फ़रमाया, "पहला घूँट वह है जो गुस्से को टालने के लिए पिया जाता है और दूसरा घूँट वह है जो सब्र करते हुए पिया जाए।" दरअसल हम समझते हैं किसी पर अपने गुस्से का इज़हार करना हिम्मत का दिखाना है। जबकि हक़ीक़त यह नहीं है, गुस्सा हमारी कमज़ोरी की निशानी है। हम अपने जज़्बात पर जब क़ाबू रखने में नाकाम रहते हैं तभी हमें गुस्सा आता है। ऐसे में हम अक्सर कुछ ऐसी हरकत कर जाते हैं जिस पर बाद में अफ़सोस और पछतावा भी होता है। इसलिए गुस्से को टालने के लिए जो घूँट पिया जाता है वह कई एतेबार से बहुत ज़रूरी है। गुस्सा हमारी अक़्ल पर हावी होकर हम से नादानी भरे काम करवा देता है। गुस्से का घूँट पी जाना आसान न सही लेकिन फ़ायदेमंद और बहुत ज़रूरी है। गुस्से का घूँट पीकर हम सिर्फ़ गुस्से को ही नहीं टालते हैं बल्कि ज़िल्लत और परेशानी को भी टाल देते हैं। यही वजह है कि इमाम अली[अ॰] ने इस काम को पसंद किया है। इसी तरह दूसरा घूँट जो सब्र करते वक़्त

टमाटर और सेहत

टमाटर ज़ाएक़े का ही नहीं बल्कि सेहत का भी ख़ज़ाना है। खूबसूरती से जुड़ी इसकी ख़ासियत को पहचानिए और अपनी स्किन-रिलेटेड परेशानियों से छुटकारा भी पाइए।

टमाटर सिर्फ़ आपके खाने को ही टेस्टी नहीं बनाता या धनिये के साथ मिलकर टेस्टी चटनी का रूप ही नहीं अपनाता है बल्कि यह सेहत के लिए भी फायदेमंद है। यूनिवर्सिटी ऑफ़ मैनचेस्टर में की गई एक स्टडी में रिसर्च करने वालों ने पाया कि ऐसी औरतें जो रोज़ाना 55 ग्राम टमाटर पेस्ट खाती हैं, उन में सनबर्न होने का ख़तरा काफ़ी हद तक कम हो जाता है। टमाटर में लाइकोपेन नाम का एक पॉवरफुल एंटी ऑक्सिडेंट होता है जो फ़ोटो-डैमेज से स्किन की हिफ़ाज़त करता है। सूरज की पेरा-बैंगनी किरणों में ज़्यादा रहने से स्किन झुलस जाती है, बुढ़ापे का असर वक़्त से पहले नज़र आने लगता है और स्किन कैंसर का खतरा भी बढ़ जाता है। हर दिन की डाइट में लाइकोपेन का कम से कम 16 ग्राम होना भी स्किन के लिए काफ़ी है।

सनबर्न के इलाज के लिए टमाटर के पेस्ट का इस्तेमाल भी आप कर सकती हैं।

खीरा और टमाटर के पेस्ट को कुछ दिन तक लगातार झुलसी हुई स्किन पर लगाने से सनबर्न से छुटकारा मिल सकता है। फ़ेस-पैक में भी टमाटर का इस्तेमाल किया जाता है। यह स्किन की परेशानियों को दूर करने के साथ स्किन को हेल्दी भी बनाता है।

टमाटर के पेस्ट और जूस का इस्तेमाल चेहरे के पिंपल्स को दूर करने के लिए भी किया जाता है। पिंपल्स को रोकने के लिए हर दिन 15 मिनट के लिए चेहरे पर टमाटर का जूस लगाएं और उसके बाद ठंडे पानी से चेहरा धो लें। टमाटर विटामिन ए और विटामिन सी का सबसे अच्छा सोर्स है। इसके माइक्रो-न्यूट्रिऐंट्स में पिंपल को ठीक करने की ग़ज़ब की क्वालिटी होती है। वहीं, टमाटर स्किन में मौजूद एक्सट्रा तेल को भी आसानी से सोख लेता है। अगर आपकी स्किन ऑयली है तो आप टमाटर का इस्तेमाल नेचरल एस्ट्रिजेंट के तौर पर भी कर सकती हैं। टमाटर का जूस स्किन के छेदों को कुछ वक़्त के लिए टाइट कर देता है जिससे स्किन कम ऑयली होती है। बुढ़ापा आप पर अपना हमला देर से करे, इसलिए एक चम्मच टमाटर का पेस्ट, एक चम्मच शहद और एक चम्मच दही का पेस्ट बनाएं। 30 मिनट तक इस मिक्सचर को चेहरे पर लगाए रखें और उसके बाद गुनगुने पानी से चेहरा धो लें। ●

इन्सान पीता है, वह भी बहुत अहम है। क़ुरआने मजीद में 100 से भी ज़्यादा बार ईमान वालों को सब्र करने की हिदायत दी गई है। सब्र करना मोमिन होने की दलील है। दरअसल सब्र का घूँट पीना परेशानियों और दिक़्क़तों में ख़ुद को साबित क़दम रखने का नाम है। मुसीबतों और आज़माइश के वक़्त साबिर इन्सान ही ख़ुद को साबित क़दम रख सकता है। करबला का वाक़िआ भी हमें सब्र करने का पैग़ाम देता है। हज़रत अली[अ०] ने जिन दो बूँदों को बहुत पसंद किया है वह दो बूँदें उनके मुताबिक़ शहीद के ख़ून और गुनाह की तौबा में बहने वाले आँसू की बूँद है। ज़ाहिर है ख़ुदा की राह में शहीद होने वाले का मरतबा बहुत बुलंद है। उसकी शहादत जन्नत की ज़मानत बन जाती है। अगर आज हमारे पास इस्लाम जैसा लाजवाब मज़हब है तो करबला के शहीदों की वजह से, जिनके ख़ून ने इस्लाम के पौधे को सींच कर एक मज़बूत पेड़ बना दिया। आज दुनिया के तमाम मुसलमान इज़्ज़त और अक़ीदत के साथ उन शहीदों को याद करते हैं। ख़ुदा की राह में, हक़ और सच्चाई के लिए जान को क़ुरबान करना ही जिहाद है। लेकिन इसके लिए ख़ुदा पर पक्के यक़ीन और मज़बूत ईमान की ज़रूरत होती है। कमज़ोर ईमान वाला जिहाद के मैदान में टिक नहीं सकता। शहीद के ख़ून के क़तरे की तरह ही जब कोई गुनाहगार अपने गुनाहों से तौबा करता है और पछताने के वजह से उसकी आँखों में जो आँसू आते हैं वह भी इमाम अली[अ०] को बहुत पसंद हैं। तौबा की अहमियत तो इसी से ज़ाहिर होती है कि क़ुरआने मजीद में तौबा के नाम से पूरा एक सूरा ही मौजूद है। इसी तौबा ने यज़ीदी लश्कर के सिपाही हुर को इमाम हुसैन[अ०] के लश्कर में शामिल करके जनाबे हुर बना दिया। उनकी एक तौबा ने उनका रास्ता जहन्नम की तरफ़ से जन्नत की तरफ़ मोड़ दिया। सच्चे दिल से की गई तौबा अल्लाह को बहुत पसंद है। जो बात अल्लाह को पसंद है भला हज़रत अली[अ०] को कैसे पसंद नहीं होगी। यही वजह है उन्होंने अपनी 6 पसंदीदा दुनियावी चीज़ों में इसे भी शामिल किया है। ●

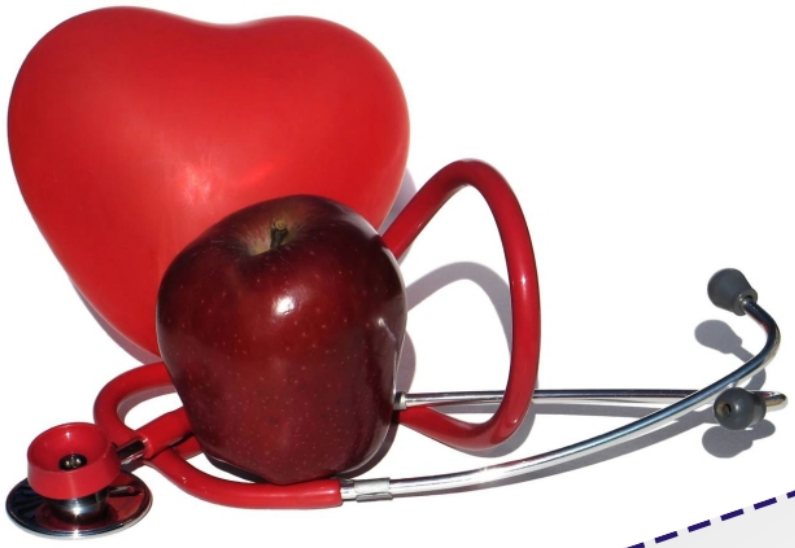

मौत की दस्तक
हाई-ब्लड प्रेशर

दुनिया की सारी मौतों की 13% वजह हाई-ब्लड प्रेशर है जबकि तम्बाकू के इस्तेमाल से 8.7%, हाई ब्लड ग्लूकोज़ से 5.8%, एक्सर्साइज़ न करने से 5.5%, मोटापे से 4.8% और हाई कोलेस्ट्रॉल से 4.5% है।

वर्ल्ड हेल्थ ऑरगेनाईज़ेशन की नई रिपोर्ट के मुताबिक़ हाई ब्लड प्रेशर, हाई ब्लड ग्लूकोज़, एक्सर्साइज़ न करने से, बचपन में सेहतमंद ग़िज़ाओं की कमी, साफ़ पानी की कमी, सफ़ाई का न होना, यह पांच बड़ी वजहें हैं जो इंटरनेशनल लेवल पर आम सेहत की परेशानी की वजह हैं। इन्हीं वजहों से कोई साठ लाख यानी क़रीब एक चौथाई हिस्सा सालाना मौतें होती हैं।

बचपन की मौतें जो वज़न और मां के दूध की कमी की वजह से होती हैं, उनको दूर किया जा सकता है।

दिल की शिकायतों की वजह से होने वाली क़रीब 75% मौतें इन आठ वजहों से होती हैं:

1-शराब का इस्तेमाल, 2-हाई ब्लड ग्लूकोज़, 3-तम्बाकू का इस्तेमाल, 4-मोटापा, 5-हाई ब्लड प्रेशर, 6-हाई कोलेस्ट्राल, 7-फल और तरकारियों का कम इस्तेमाल, 8-जिस्म को एक्टिव न रखना।

डेवलेप्ड कंट्रीज़ में लोग ज़्यादा तर इन्हीं मौतों का शिकार होते हैं। साथ ही दुबलेपन के मुक़ाबले में मोटापे से भी ज़्यादा मौतें होती हैं। ग़ैर सेहतमंद और अन-हाइजीनिक माहौल की वजह से दुनिया में चार में से एक मौत बच्चों की होती है।

ग़रीब और कम आमदनी वाले मुल्कों में सेहतमंद ग़िज़ाओं की कमी की वजह से 38 नये पैदा होने वाले बच्चों में से एक पाँच साल की उम्र तक पहुंचने से पहले मर जाता है।

एक्सपर्टस के मुताबिक़ हिन्दुस्तान में इंटरनेश्नल हेल्थ रिपोर्ट के मुताबिक़ हिन्दुस्तान के लिए यह एक ख़तरनाक निशानी है जो दुनिया में सबसे ज़्यादा ब्लड प्रेशर से हुई है।

क़रीब दस करोड़ से ज़्यादा हिन्दुस्तानी लोग न सिर्फ़ यह कि मौजूदा ब्लड प्रेशर से बल्कि हाई ब्लड ग्लूकोज़ से भी ज़्यादा लोग इफेक्टेड हैं। क्या वजह है कि इतने ज़्यादा हिन्दुस्तानी ब्लड प्रेशर से परेशान हैं\ इसकी वजह सिर्फ़ और सिर्फ़ हमारा जीने का स्टाइल है।

ख़ूब लज़ीज़ मुरग़्न ग़िज़ाओं का इस्तेमाल और कोई जिस्मानी एक्सरसाइज़ नहीं करना, नमक का ज़्यादा इस्तेमाल। एक्सपर्टस के मुताबिक़ एक सेहतमंद शख़्स को भी दिन में कोई 6 ग्राम से ज़्यादा नमक इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। चिकनी, चर्बीदार, तली-भुनी ग़िज़ा का इस्तेमाल, शराब का इस्तेमाल और तंबाकू का इस्तेमाल इसकी वजह हैं।

ब्लड प्रेशर उम्र के हर हिस्से में क़ाबू में रहना चाहिए। आज हमारा मुल्क बीमारियों का शहर बन चुका है। मंहगी-मंहगी बीमारियों के मज़बूत जाल में हम जी रहे हैं। जिनकी वजह से नये-नये स्पेशालिटी हास्पिटल आज कल तरक़्क़ी पर हैं।

कोई घर बीमारी से ख़ाली नहीं, आज के दौर में दुनिया में सबसे मंहगी चीज़ अगर कुछ है तो वह है इलाज। हिन्दुस्तान का एक-एक शहर अब बीमारियों का सेंटर बन चुका है। इसकी सिर्फ़ और सिर्फ़ वजह है हमारा Life-Style जिसको बदलना बहुत ज़रूरी है वरना मौत कभी भी आ दबोचेगी। जीने के लिए खाना है न कि खाने के लिए जीना। ज़िंदगी अल्लाह तआला की एक अज़ीम नेमत है और सेहत है तो ज़िंदगी मज़ेदार है। इबादतों और रियाज़तों के लिए भी सेहतमंद रहना ज़रूरी है। जान है तो जहान है। सेहत हज़ार नेमत है, आज हमारे समाज में दावतों का क्या हाल है, दावतों में आप कितने बजे खाना खाते हैं, खाने और सोने में दो घंटे का फ़र्क़ होना चाहिए। दावतों में ऐसे हंगामा रहता है जैसे जंग का ऐलान हो गया हो। फिर यह बात भी अजीब है कि आपकी प्लेट में आपके चाहने वाले उंडेलते चले जाते हैं। क्या आपने कभी हिसाब से खाया, बल्कि दावत में आप जो खाती हैं उसमें कितनी कैलोरीज़ होती हैं और आपकी उम्र, सेहत और जिस्मानी मेहनत के हिसाब से आपको कितनी कैलोरीज़ चाहिए होती हैं? क्या आपने कभी सोचा कौन-कौन सी बीमारियों में आप घिर चुकी हैं और आपको किन चीज़ों से परहेज़ करना चाहिए? आज जिस शहर में देखिए सारे शहर मैरेजहाल से आबाद हैं और फ़ज्र में सारी मस्जिदें वीरान, मुश्किल से मोअज़्ज़िन साहब, पेश इमाम, और मोहल्ले के कोई बूढ़े, खांसी वाले बुर्ज़ुग, आमतौर पर तीन ही लोग जमाअत में होते हैं। साथ में यह भी कि कोई पाबंदी से अपना हेल्थ चेकअप भी नहीं करवाता। यह है हालत हमारे समाज की जिसकी वजह ब्लेड प्रेशर एक जानलेवा बीमारी बनी हुई है।

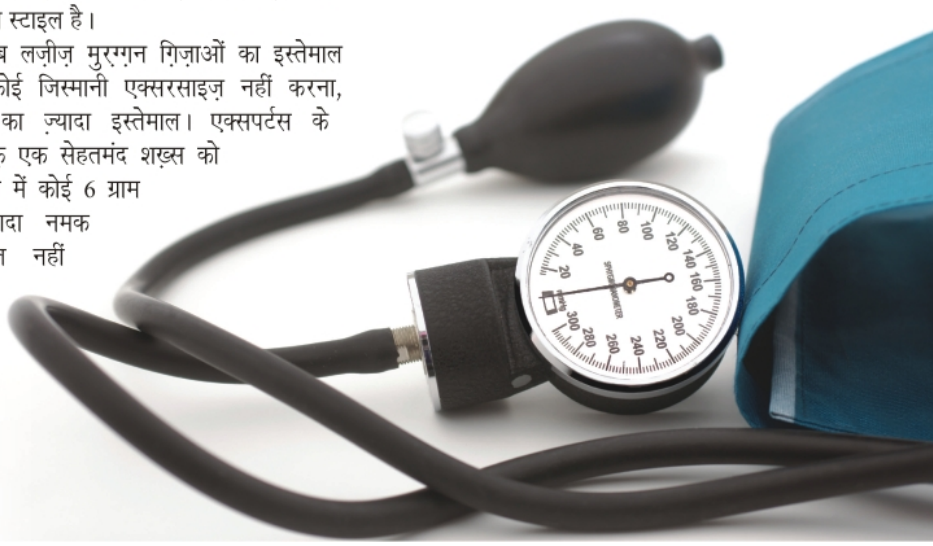

सिर्फ़ ख़ुदा था

■ अब्बास असग़र शबरेज़

ख़ुदा था और कुछ भी नहीं। अभी दुनिया में कोई ख़िलक़त नहीं हुई थी, घटाटोप अंधेरा था, हर तरफ़ जिहालत थी, चारों तरफ़ कुछ भी नहीं था, बस एक ख़ौफ़नाक चादर पड़ी हुई थी। कहीं भी अभी कोई चहल-पहल नज़र नहीं आ रही थी। ख़ुदा भी एक ''कलिमा'' था, एक ऐसा कलिमा जो अभी किसी को नहीं दिया गया था। ख़ुदा ख़ालिक़ था लेकिन ऐसा ख़ालिक़ जिसकी ख़ालिक़ियत अभी तक छुपी हुई थी। ख़ुदा रहमान व रहीम था लेकिन अभी उसकी रहमतों की बारिश किसी पर नहीं होती थी.... ख़ुदा हसीन था लेकिन अभी उसका हुस्न तजल्ली की हदों तक नहीं पहुँच पाया था। ख़ुदा आदिल था लेकिन अभी उसका अद्ल सामने नहीं आ सका था। ख़ुदा क़ुदरत वाला था लेकिन अभी उसकी क़ुदरत छुपी हुई थी। जब हर तरफ़ कुछ भी न हो तो वह किस तरह अपने कमाल, जलाल और जमाल को पेश करता? जब हर तरफ़ ख़ामोशी हो तो किस तरह 'कलिमा' की बात की जा सकती है? आख़िर ठहराव में कैसे ख़िलक़त व क़ुदरत का लोहा मनवाया जा सकता है? कुछ भी नहीं था, अंधेरा था...बस एक था वह अन्धेरा और एक सन्नाटा व ख़ामोशी।

अचानक ख़ुदा का इरादा 'कुन-फ़-यकून' की मंज़िलों को छू गया। पहाड़, दरिया, आसमान, कहकशाँ सब पैदा हो गए। एक अजीबो ग़रीब इन्क़ेलाब आ गया! एक अजीबो ग़रीब तूफ़ान! एक अजीबो ग़रीब सैलाब! एक क़यामत का शोर था जिसमें ''मूवमेंट'' को क्रिएशन की बुनियाद बनाया गया था, जिसमें ज़िन्दगी अपनी तमाम रंगीनियों के साथ खिल उठी थी। पेड़, जानवर और परिन्दे हरकत में आ गए थे। ख़ुदा का जलाल दुनिया पर छा गया था और उसका जमाल हर तरफ़ ख़ूबसूरती और हुस्न के झंडे गाड़ रहा था। दुनिया के इस अजीबो ग़रीब सिस्टम की बक़ा को परफ़ेक्शन पर आगे बढ़ाया गया। जानवर और हैवान इस तरफ़ से उस तरफ़ दौड़ने-भागने लगे और चरिंद-परिंद अपनी मीठी-मीठी आवाज़ों के साथ इधर-उधर उड़ने-फुदकने लगे।

फ़रिश्तों ने नग़मा-ए-इबादत गाना शुरु कर दिया। एक अजीब सा हंगामा था, एक अजीब शोर सा था, एक अजीब सा वलवला!

इसी बीच ख़ुदा ने इन्सान को पैदा किया, उसको अपनी सूरत बख़्शी और उसके अन्दर अपनी रूह फूंकी। इसके बाद इस अजीबो ग़रीब मख़लूक़ को दूसरी अंगिनत मख़लूक़ों के बीच आज़ाद कर दिया। नया इन्सान, इन तमाम रंगों, शक्लों, सूरतों, हरकतों और उस शोर-गुल व हंगामे से घबरा गया, डर गया। डर की वजह से एक जगह से दूसरी जगह भागने लगा और एक ऐसी जगह तलाश करने लगा जहाँ किसी के साथ मिल-बैठ सके, किसी को अपना हमराज़ बना सके, किसी से अपना दर्दे दिल बयान कर सके... अपनी तन्हाई, घबराहट और अकेलेपन से छुटकारा हासिल कर सके।

फ़रिश्तों के पास गया और उनके सामने दोस्ती का हाथ बढ़ाया। सारे के सारे फ़रिश्ते सर झुका कर आगे बढ़ गए और उसको अकेला छोड़ दिया। इन्सान की बात का कोई जवाब नहीं दिया और ख़ामोश हो गए। यह डरा हुआ और दिल टूटा हुआ इन्सान अपने आप से बातें करने लगा, ''मुझे देखो! मैं मिट्टी का एक हक़ीर सा इन्सान, फ़रिश्तों से बात करना चाहता हूँ!'' इसके बाद सख़्त लहजे में ख़ुद से कहा, ''ऐ मिट्टी की छोटी सी मख़लूक़! तुझे क्या हक़ है कि फ़रिश्तों के आगे दोस्ती का हाथ फैलाए?'' फिर मायूस और शर्मिन्दा होकर किसी कोने में बैठ गया। वक़्त गुज़रने के साथ-साथ उसके हालत संभलती गई और वह उस शर्मिन्दगी वाली हालत से किसी हद तक बाहर आ गया और एक बार फिर उसको तन्हाई और अकेलापन काट खाने लगा और मजबूर होकर वह किसी नए की तलाश में निकल खड़ा हुआ।

उसने एक उड़ते हुए परिन्दे को देखा जो अपने परों को फैलाए हुए आसमान में बड़े मज़े से उड़ा जा रहा था। इन्सान को ये उड़ता हुआ परिन्दा बहुत पसन्द आ गया। उसे यह बहुत अच्छा लगा कि उस परिन्दे ने ख़ुद को ज़मीन की चारदीवारी से आज़ाद कर लिया है और उस से बाहर निकल कर आसमानों में सैर कर रहा है। आगे बढ़ा और उस परिन्दे से सवाल किया कि क्या मुझ से दोस्ती करोगे? क्या तुम मुझे अपने साथ उड़ने का मौक़ा दोगे? परिन्दे ने कोई जवाब नहीं दिया और अपनी उसी रफ़्तार से उड़ता रहा और इन्सान को उसी हालत में छोड़ता हुआ आगे बढ़ गया। इन्सान ने एक बार फिर मायूस और नाउम्मीद होते हुए ख़ुद से कहा, ''मुझे देखो! मैं मिट्टी का एक हक़ीर सा इन्सान!''

आगे बढ़ा और जानवरों के पास पहुँचा। किसी भी जानवर ने उसकी किसी भी बात का कोई जवाब नहीं दिया। बादलों के पास गया क्योंकि चाहता था कि बादलों के साथ आसमान में उड़ता फिरे लेकिन बादलों ने भी उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया और चुप-चाप आगे बढ़ गए। समन्दर के पास गया और उस से कहा कि क्या तुम मेरे दोस्त बनना पसंद करोगे? उस ने समन्दर की मौजों से सवाल किया कि क्या तुम मुझे इजाज़त दोगी कि तुम्हारे साथ समन्दर के सीने पर बैठ जाऊँ, ख़ुशी के मारे क़हक़हे लगाता फिरूँ, इस कोने से उस कोने की सैर करूँ, मग़रूर पत्थरों के चेहरों पर तमांचे लगाऊँ और उसके बाद हमेशा-हमेशा के लिए ख़ुदा की बारगाह में हाज़िर होकर ख़ुद को ख़ुदा की ज़ात में मिला दूँ...लेकिन जैसे मौजों ने उसके सवाल को ही अनसुना कर दिया था। इन्सान एक बार फिर किसी हारे हुए की तरह आगे बढ़ गया और पहाड़ों की तरफ़ क़दम बढ़ाए। पहाड़ों की बुलन्दी को देखकर वह दातों तले उंगली दबाए रह गया। फिर भी उसने डरते-डरते दोस्ती का हाथ आगे बढ़ा ही दिया लेकिन पहाड़ अपनी ऊँचाई में इतने मग़रूर थे कि उन्होंने इन्सान की तरफ़ देखा तक नहीं।

मायूस इन्सान ने थक-हार कर आसमान की तरफ़ देखा और कभी ख़त्म न होने वाले आसमान को देखता ही रह गया। ख़ुशी-ख़ुशी आसमान के आगे भी दोस्ती का हाथ बढ़ा दिया...लेकिन आसमान की डरावनी ख़ामोशी ने उसको समझा दिया कि ऐ मिट्टी से बने हुए इन्सान! मेरी दोस्ती के लिए तुझे मेरे जैसा बनना पड़ेगा।

उसने सितारों की तरफ़ आंख उठाकर देखा लेकिन हर एक ने अपना चेहरा घुमा लिया।

इन्सान बयाबानों में चला गया और चाहा कि बयाबानों की तन्हाईयों में अपनी बाक़ी ज़िंदगी गुज़ार दे लेकिन उन तन्हाईयों ने भी इन्सान को अपने पास भटकने न दिया।

थका हुआ, टूटा हुआ, मुरझाया हुआ... इन्सान एक जगह बैठ गया और मायूसी के अन्दाज़ में सोचों के गहरे समन्दर में उतरता चला गया और सोचने लगा कि इस भरी हुई दुनिया में एक भी मख़लूक़ ऐसी नहीं है जिस से वह दोस्ती कर सके। आख़िर मैं कितना गिरा हुआ और हक़ीर हूँ!

इन्सान के सब्र का पैमाना भर चुका था। उस से नहीं रहा गया। अचानक उसने बहुत दिल दहलाने वाली एक चीख़ मारी, आँखों से आंसुओं का समन्दर जारी हो गया। उसके दिल की गहराईयों से एक दर्दनाक अवाज़ उभरी कि कौन है जो इस हक़ीर इन्सान को अपना साथी बना सकेगा? मैं पस्त हूँ, मैं हक़ीर हूँ, मैं बदबख़्त हूँ, मैं गुनाहगार हूँ, मैं हर तरफ़ से ठुकराया गया हूँ। कौन है जो मेरी तन्हाईयों में मेरा साथी बन सकेगा। कौन है जो मेरी तरफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ाएगा? कौन है जो मेरा हमसफ़र बन सकेगा?

तभी अचानक एक महशर बरपा हो गया। ज़मीन लरज़ने लगी, आसमान कांपने लगा, काली आंधियाँ शुरु हो गईं, ख़तरनाक क़िस्म की बिजली गरजने लगी। ऐसे लगने लगा कि जैसे ज़मीन के अंदर कोई बड़ा ज़बरदस्त धमाका हो गया है। इसी बीच एक ऐसी आवाज़ आई जो दुनिया के ज़र्रे-ज़र्रे से फूटती हुई दिखाई पड़ रही थी:

ऐ इन्सान! तू मेरा महबूब है, मैंने दुनिया को तेरे लिए पैदा किया है, तुझको मैंने अपने जैसा बनाया है, तेरे अंदर मैंने अपनी रूह फूंकी है और अगर कोई तेरी आवाज़ पर जवाब नहीं दे रहा है तो इसकी वजह सिर्फ़ और सिर्फ़ ये है कि उनमें से कोई भी तेरे बराबर और तेरी शान व मंज़िलत के हिसाब से नहीं है। यही वजह है कि किसी में भी इतनी हिम्मत नहीं है कि वह तेरी हमनशीनी कर सके। यहाँ तक कि जिब्राईल जैसे अज़ीम फ़रिश्ते में भी इतनी हिम्मत नहीं है कि वह तेरे बराबर हो सके और अगर उसने ऐसा किया तो उसके पर जल जाएंगे और मेराज की मन्ज़िलों में परवाज़ नहीं कर सकेगा।

ऐ इन्सान! सिर्फ़ तू ही वह मख़लूक़ है जो हुस्न और ख़ूबसूरती को समझ सकता है। यही वजह है कि जमाल, जलाल और कमाल तुझे अपनी तरफ़ खींचते रहते हैं। सिर्फ़ तू ही ऐसी मख़लूक़ है जो ख़ुदा के इश्क़ व मुहब्बत के जज़्बे के साथ इबादत करती है न कि किसी ज़ोर व ज़बरदस्ती की वजह से। सिर्फ़ तू ही ऐसी मख़लूक़ है जिसको ख़ुदा ने ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा बनाकर भेजा है, तू ख़ुदा का सफ़ीर है, तू ख़ुदा का नुमाएन्दा है।

ऐ इन्सान! अकेला तू ऐसी मख़लूक़ है जो ख़ुदा की क़ुदरत और ख़ल्लाक़ियत को समझ सकता है। सिर्फ़ तू ही ऐसी मख़लूक़ है जो मग़रूर भी हो जाती है और गुनाह भी करती है, ज़बरदस्त जंग भी करती है और जब हार हो जाती है तो अपने आप सीधी हो जाती है और यही वह लम्हा होता है जब तू ख़ुदा को अपना ख़ालिक़ और अपना पालने वाला समझता है। सिर्फ़ तू ही है जिसने मिट्टी और ख़ुदा के बीच के फ़ासले को तय किया है।

ऐ इन्सान! सिर्फ़ तू ही तो है जिसको सूरज के डूबने का मन्ज़र मस्त कर देता है और यही वह वक़्त होता है जब इश्क़ तेरे दिल में आग लगा देता है और तेरी आँखों से आँसू बहने लगते हैं।

ऐ इन्सान! तेरी पैदाइश अपने कमाल तक पहुँच चुकी है। सिर्फ़ तेरी ही वजह से इश्क़ अपने हक़ीक़ी मायनों को हासिल कर सका है।

ऐ इन्सान! तू मुझ से इश्क़ करता है और मैं तुझसे इश्क़ करता हूँ। तू मुझ से है और तुझे मेरी ही तरफ़ पलटना है।

"इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"

ذوالقرنین

ज़ुलक़रनैन कौन थे?

■ सै. आलिम हुसैन रिज़वी
बनारस

अगर आपको हिस्ट्री से दिलचस्पी है या अगर आपने क़ुरआने मजीद को पढ़ा है तो आपने 'ज़ुलक़रनैन' नाम ज़रूर सुना या पढ़ा होगा। हम इस आर्टिकिल में क़ुरआन का सहारा लेते हुए ज़ुलक़रनैन कौन थे, इसका पता लगाने की कोशिश करते हैं।

क़ुरआने मजीद की स्टडी से एक बात यह उभर कर सामने आती है कि क़ुरआन ने जिन नामों को अपने अंदर जगह दी है उनको या तो अरब के काफ़िर, यहूदी और ईसाई उन लोगों का इस इलाक़े का होने की वजह से पहले से जानते थे या फिर उन्होंने ऐसे नामों को अहमियत दी है जो क़ुरआन की नज़रों में बहुत अहमियत रखते हैं। उन्हीं में से एक नाम ज़ुलक़रनैन का भी है।

क़ुरआन के पारा 16 में सूरए कहफ़ की आयत 83-98 में लोगों के पूछने पर ज़ुलक़रनैन के बारे में बयान किया गया है। चूँकि क़ुरआन पर हमें भरपूर यक़ीन है इसलिए हमें क़ुरआने मजीद से नीचे लिखी बातों का पता चलता है:-

1- ज़ुलक़रनैन एक नेक बादशाह थे जिन्हें अल्लाह ने बहुत ताक़त दी थी। जिस अंदाज़ से उनके बारे में बयान हुआ है उस से यह गुमान होता है कि वह पैग़म्बर थे लेकिन इस बारे में लोगों की कोई एक राए नहीं हैं। फिर भी उनके नेक बादशाह होने में कोई शक नहीं है।

2- उन्होंने तीन दिशाओं में सफ़र किया था। पहली दिशा में वह ऐसी जगह पहुँचे जहाँ से सूरज डूबता हुआ ऐसा दिखाई दिया जैसे वह काली-काली कीचड़ के झरने में डूब रहा है। इस से ऐसा इशारा मिलता है कि वह कोई दलदली ज़मीन थी।

3- दूसरी दिशा में चलते हुए वह ऐसी जगह पहुँचे जहाँ सूरज निकल रहा था और ऐसा लग रहा था जैसे वह ऐसी क़ौम के इलाक़े में निकल रहा है जिसके लिए सूरज के सामने कोई आड़ नहीं बनाई गई थी। इस जगह को तय करना खुद एक रिसर्च का सब्जेक्ट है।

4- तीसरी दिशा में चलते हुए वह दो दीवारों या रुकावटों के बीचो बीच पहुँचे। इन दीवारों के दूसरी तरफ़ एक क़ौम थी जो वहाँ रहने वालों की ज़बान नहीं समझती थी। वैसे वहाँ के लोगों ने यह बताया कि दूसरी तरफ़ याजूज-माजूज की क़ौम है जो इस इलाक़े में आकर उधम मचाती है।

5- हालांकि तीनों दिशाओं में ज़ुलक़रनैन का जिन तीन अलग-अलग क़ौमों या क़बीलों से सामना हुआ उनका नाम क़ुरआन ने नहीं बताया है लेकिन आख़िरी दिशा की क़ौम ने उनको सताने वाली क़ौम का नाम बताया। क़ुरआन ने उनका नाम याजूज और माजूज लिखा है।

6- आख़िरी दिशा वाली क़ौम के कहने पर ज़ुलक़रनैन ने उन्हें याजूज-माजूज से बचाने के लिए एक लोहा और तांबा पिलाई हुई दीवार बनाई।

बस इसके बाद क़ुरआन ख़ामोश है। क़ुरआन से इस बात का कोई पता नहीं चलता कि ज़ुलक़रनैन अस्ल में कहां के रहने वाले थे और उनका नाम ज़ुलक़रनैन क्यों था? उनका यह नाम रखने की वजह क्या थी। क़ुरआन से इन मालूमात के न मिलने की वजह से क़यास और ख़यालात के घोड़े दौड़ाए जाने लगे। कुछ लोगों ने उन्हें सिकंदरे आज़म समझ लिया और कुछ ने उन्हें दूसरा सिकंदर समझा। फिर भी समझा सिकंदर ही क्योंकि अक्सर किताबों में दीवारे सिकंदरी या सद्दे सिकंदरी का ज़िक्र हुआ है।

आइए! अलग-अलग लोगों के नज़रियों का जाएज़ा लेकर हम इस नतीजे पर पहुँचने की कोशिश करते हैं कि आख़िर ज़ुलक़रनैन कौन थे?

क़ुरआन में सवालों के जवाब में ज़ुलक़रनैन का ज़िक्र किया गया है जिस से एक बात तो साफ़ है कि ज़ुलक़रनैन उस वक़्त भी उतने ही मशहूर थे कि क़ुरआन में उनका ज़िक्र आने से पहले ही लोग उन्हें जानते थे तभी तो यहूदियों ने उनके बारे में रसूले अकरम[ﷺ] से पूछा था।[1]

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि इस बारे में भी एक राय नहीं है कि वह पैग़म्बर थे भी या नहीं। रसूलुल्लाह[ﷺ] और दूसरे मासूमीन[अ] की रिवायतों से पता चलता है कि हालांकि वह नबी नहीं थे लेकिन एक नेक और अल्लाह से डरने वाले इन्सान थे। उनका अल्लाह पर और मौत के बाद दूसरी ज़िंदगी और क़यामत पर ईमान था और वह एक खुले दिमाग़ के हाकिम थे।[2]

ज़ुलक़रनैन को ज़ुलक़रनैन क्यों कहा जाता है, इस बारे में कई अंदाज़े हैं। ज़ुलक़रनैन के मायने असल में दो ऐसे निशान के हैं जो किसी ऐसे जानदार के बारे में हों जो इस निशान की वजह से मशहूर हो जाए जैसे कुछ जानवरों में उनकी दो सींगें। दो क़र्न यानी दो सदियों की तरह दो वक़्त का फ़ासला या दो ज़मीनों के बीच अलग करने वाले निशान या माथे पर दो उभरे हुए निशान या बालों की दो लट और एक आदमी का क़लम और तलवार दोनों का भरपूर इस्तेमाल।

बहरहाल रिसर्च करने वालों ने ख़ूब-ख़ूब ख़यालों के घोड़े दौड़ाए हैं और सींग से लेकर दो विद्याओं के इल्म तक हर चीज़ ज़ुलक़रनैन पर लागू करने की कोशिश की है। कुछ नमूने देखें:

1- अपनी क़ौम में तबलीग़ के दौरान ज़ुलक़रनैन पर उनके सिर के दाहिनी तरफ़ तलवार से ज़ख़्म पहुँचाया गया जिससे उनकी मौत हो गई और 100 या 500 साल बाद अल्लाह ने उन्हें फिर ज़िंदगी दी। दोबारा उनके सिर के बाईं तरफ़ तलवार से ज़ख़्म पहुँचाया गया और फिर वह सौ या पाँच सौ साल मुर्दा रहे और अल्लाह ने उन्हें फिर ज़िंदा किया। इन दो ज़ख़्मों की वजह से उनके सिर के दोनों तरफ़ दो निशान बन गए जिसकी वजह से उन्हें ज़ुलक़रनैन कहा गया।[3]

2-वह दो क़रनों तक ज़िंदा रहे यानी दो ज़मानों तक। इसलिए वह ज़ुलक़रनैन कहलाए।[4]

3-उनके सिर के दोनों तरफ़ दो सींगें या दो उठे हुए निशान थे।

4-वह दो आख़िरी हदों यानी पूरब और पश्चिम के हाकिम थे।

5- उनके ताज में दो नोकें थीं।

6- वह नूर और ज़ुलमात (उजाले और अंधेरे इलाक़ों) में दाख़िल हुए थे।

7- उनके बालों की दो लटें थीं।

8- उन्होंने ख़्वाब में देखा कि वह आसमान में पहुँच गए हैं और उन्होंने सूरज को दोनों तरफ़ से पकड़ रखा है।

9- क्योंकि वह बहुत ताक़तवर और बहादुर थे (क़र्न के मायने ताक़त के भी होते हैं) और अल्लाह ने उनको ख़ास इख़्तियार दे रखे थे।[5]

नाम

इस बारे में भी अलग-अलग राए हैं। कुछ उन्हें अयाश या अब्दुल्लाह इब्ने ज़ोहाक बताते हैं। कुछ उन्हें सिकंदर ज़ुलक़रनैन कहते हैं और कुछ उन्हें मक़दूनिया वाला सिकंदरे आज़म बताते हैं।

इस सिलसिले में इमाम अली[अ] का क़ौल भी मिलता है कि ज़ुलक़रनैन क़ौम के रिफ़ार्मर थे। उनका एक अल्लाह पर ईमान था और वह उसके दीन की तबलीग़ भी करते थे। वह ज़ुलक़रनैन इसलिए थे क्योंकि अल्लाह ने उन्हें दो बार उठाया था। बादलों पर उनका कंट्रोल था। जीत के लिए जो चीज़ें ज़रूरी हैं अल्लाह ने उन्हें सब दे रखी थीं। उनको ऐसा नूर दिया गया था जिससे वह रात में भी साफ़ देख सकते थे और अल्लाह ने उनके लिए सारी मुश्किलें आसान कर दी थीं।[6]

ज़ुलक़रनैन असल में कौन थे, इस बारे में रिसर्च करने वालों के लिए तीन अंदाज़े सामने आते हैं:

1- आम ख़याल के मुताबिक़ और कुछ रिसर्च करने वालों के ख़याल में भी ज़ुलक़रनैन असल में मक़दूनिया का बादशाह सिकंदरे आज़म है। वह अरस्तू का शार्गिद था। उसने रोम, मिस्र और दूसरे पश्चिमी मुल्कों पर जीत हासिल की और इस्कंदरिया (Alexandria) शहर की नींव रखी। तब उसने सीरिया और बैतुल मुक़द्दस फ़तह किया। वहाँ से वह आरमीनिया गया और फिर इराक़ व ईरान फ़तह करते हुए चीन व हिन्दुस्तान तक पहुँच गया। वापसी में ख़ुरासान होते हुए इराक़ आया। वह वहाँ बीमार पड़ा और ज़ोर शहर में उसकी मौत हो गई। यह वाक़िआ ईसा से तीन सदी पहले का है। उसकी लाश इस्कंदरिया में दफ़्न के लिए लाई गई।

अब्दुल्लाह यूसुफ़ अली ने क़ुरआन के अपने ट्रांस्लेशन में सिकंदरे आज़म को ही ज़ुलक़रनैन माना है। उनके मुताबिक़ वह पूरब और पश्चिम का हाकिम था। उसने पहली बार यूनान को एक किया था। उस वक़्त के सिक्कों में उसके सिर पर दो सींगें दिखाई जाती हैं।

अल्लामा हुसैन बख़्श ने अपनी तफ़सीर

अनवारुन नजफ़, पेज 123-126 में इस अंदाज़े पर शक ज़ाहिर किया है। उनका कहना है कि सिकंदरे आज़म ज़ुलक़रनैन नहीं था बल्कि हज़रत इब्राहीम[अ०] के वक़्त में ही ज़ुलक़रनैन भी थे क्योंकि क़ुरआन के मुताबिक़ ज़ुलक़रनैन मोमिन थे जबकि सिकंदरे आज़म बुत-परस्त था और यूनानी देवताओं को मानता था। लेकिन हिस्ट्री में अल्लामा हुसैन बख़्श के बताए हुए हज़रत इब्राहीम के ज़माने के ज़ुलक़रनैन की सिफ़तों वाले बादशाह का कुछ अता पता नहीं मिलता।

कुछ स्कालर्ज़ का कहना है कि ज़ुलक़रनैन ईरान के एक प्राचीन बादशाह थे क्योंकि बाइबल के Old Testament के किताबे दानियाल वाले हिस्से में एक ईरानी बादशाह का ज़िक्र रैम (Ram-भेड़ा) के तौर पर किया गया है। वह बादशाह एक सींग वाले भेड़े के ज़रिये मारा गया था और उस पर दो निशान पड़ गए थे। लेकिन यह अंदाज़ा यक़ीन करने के क़ाबिल नहीं है क्योंकि हमारी किसी भी किताब से इसका पता नहीं चलता कि ज़ुलक़रनैन का अंजाम इस तरह हुआ हो।

2- दूसरे अंदाज़े के मुताबिक़ ज़ुलक़रनैन यमन के बादशाह थे। तफ़सीरे नमूना में है कि यमन के हमियानी क़बीले के शायरों ने बुत-परस्ती के दौर की अपनी शायरी में उस बादशाह का ज़िक्र किया है। उनके मुताबिक़ ज़ुलक़रनैन के ज़रिये बनाई गई दीवार, दीवारे मआरब थी।

3- तीसरा और नया अंदाज़ मौलाना अबुलकलाम आज़ाद का है। उन्होंने एक किताब "ज़ुलक़रनैन और कोरूश कबीर" इस सब्जेक्ट पर लिखी है। तफ़सीरे नमूना के मुताबिक़ बहुत से स्कालर्ज़ ने मौलाना आज़ाद के अंदाज़े की हिमायत की है। मौलाना आज़ाद के मुताबिक़ ज़ुलक़रनैन हख़ामनिश के बादशाह कोरूश कबीर थे।

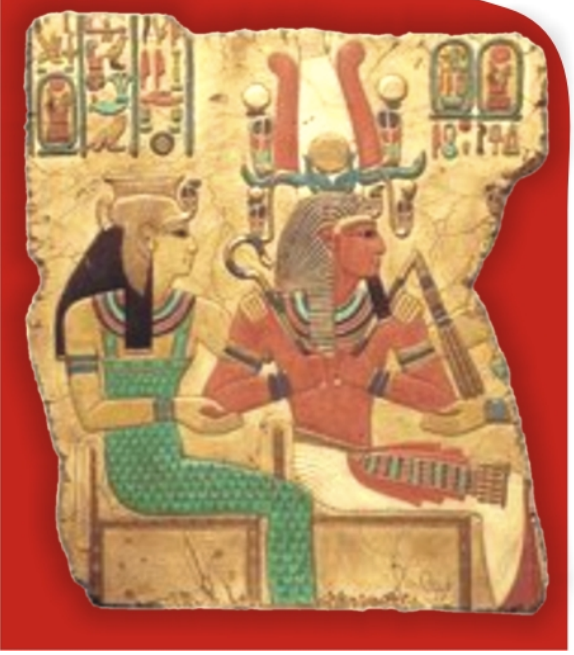

अब अगर पिछली बातों पर ग़ौर करें और सारे अंदाज़ों को ध्यान से देखें तो पता चलेगा कि स्कालर्स के पहले दो अंदाज़े क़ुरआन में बताई गई सिफ़तों पर पूरे नहीं उतरते और न कोई इस बारे में एतिहासिक सुबूत हैं। न तो यमन का बादशाह इस कटेगेरी में आता है, न सिकंदरे आज़म। यह बात तो तय है कि सिकंदरे आज़म ने लोहे व तांबे की दीवार नहीं बनाई थी। जहाँ तक यमन की दीवारे मआरब का सवाल है, वह ज़ालिमों का आना बंद करने के लिए नहीं बनाई गई थी बल्कि वह दीवार तो बाढ़ को रोकने व पानी को जमा करने के लिए बनाई गई थी। सबा, यमन में एक शहर था। मुल्क को ख़ुशहाल रखने के लिए मआरब बाँध बनाया गया था।

अब सिर्फ़ तीसरा अंदाज़ा कोरूश कबीर का बचता है। मौलाना आज़ाद ने जो इस बारे में बयान किया है वह बात दिल को लगती है।

19वीं सदी में ईरान की मरग़ब नदी के पास कोरूश के एक स्टेचू का पता लगाया गया था जो एक इन्सान के स्टेचू के बराबर है। कोरूश के बाज़ के परों की तरह इसमें दो बाज़ू बने हैं। उसके ताज में भेड़े की सींगों की तरह दो सींगें बनी हैं। जब मौलाना आज़ाद ने तौरेत में ज़ुलक़रनैन के सिलसिले में दी गई तफ़सील का मुक़ाबला उस स्टेचू के साथ किया तो उन्हें यह अंदाज़ा हुआ कि क्यों ज़ुलक़रनैन दो सींग वाले मशहूर हैं और क्यों कोरूश के स्टेचू में एक बाज़ के दो बाज़ू बने हैं।

दूसरी वजह जो इस अंदाज़े की हिमायत करती है वह यूनानी हिस्टोरियन हरोदत की हिस्ट्री की किताब में लिखी गई कोरूश की बहुत अहम ख़ुसूसियतें हैं। वह लिखता है कि कोरूश ने यह हुक्म जारी किया था कि उसके फ़ौजी जंग और बाग़ियों का सिर कुचलने को छोड़कर किसी और पर तलवार नहीं उठाएंगे। जो अपने हथियार रख दे, उसे न मारा जाए। कोरूश बहुत रहमदिल बादशाह था। वह इंसाफ़ पसंद था और दौलत का इस्तेमाल अपनी प्रजा की भलाई के लिए करता था।

दसूरे यूनानी हिस्टोरियन डीनेफ़ून ने भी कोरूश की यही सिफ़तें बताई हैं।

कोरूश क़ुरआन में ज़ुलक़रनैन के लिए बयान की गई सिफ़तों से इसलिए मेल खाता है क्योंकि कोरूश ने ही तीन अलग-अलग दिशाओं यानी पश्चिम, पूर्व और उत्तर में सफ़र किया था और उसके तीनों सफ़रों की तफ़सील हिस्ट्री की ऊपर लिखी गई किताबों में दर्ज है।

हरोदत लिखता है कि कोरूश ने पहले लीबिया पर हमला किया जो उसकी राजधानी के पश्चिम की तरफ़ था। तब उसने पूर्व की ओर रहने वाले जंगली लोगों पर हमला किया। उसके बाद वह उत्तर में क़फ़क़ाज़ की पहाड़ियों की तरफ़ गया, यहाँ तक कि वह एक दर्रे के पास पहुँचा। इस पहाड़ की घाटी में रहने वाले लोगों ने कोरूश से एक ज़ालिम क़ौम के ज़ुल्म और ज़ोर ज़बरदस्ती से उन्हें बचाने की गुज़ारिश की। इसलिए कोरूश ने एक मज़बूत दीवार बनाई।

वह दर्रा जहाँ कोरूश ने यह दीवार बनाई थी वह आज दारियाल दर्रे के नाम से जाना जाता है। यह नक़शे में तफ़लिस और वला-डी-कोक्स के बीच है। क़ुरआन में ज़ुलक़रनैन की बनाई हुई दीवार की ख़ासियतें वही हैं जो कोरूश की बनाई हुई दीवार में पाई जाती हैं।

यह सारी बातें कोरूश कबीर के ही ज़ुलक़रनैन होने की तरफ़ इशारा कर रही हैं। आगे अल्लाह बेहतर जानता है।

1-तफ़सीरे नमूना/470, 2-हयातुल क़ुलूब/281, 3-तफ़सीरे नमूना/469-470, 4-हयातुल क़ुलूब, 283, 5-हयातुल क़ुलूब/2535, 6-किताब अनवारुन्नजफ़/122

वीमेन राइट्स

EQUALITY = YES
SIMILIARITY = NO

■ शहीद मुतह्हरी

औरत और मर्द के घरेलू ताल्लुक़ात और राईट्स में इस्लाम की एक ख़ास फ़्लॉसफ़ी है। इस्लाम का नज़रिया चौदह सौ साल पहले के नज़रिए से बिल्कुल अलग है और आज के मार्डन नज़रियों से भी मेल नहीं खाता है।

इस्लाम में औरत और मर्द के इन्सानियत के लिहाज़ से बराबर होने में कोई शक नहीं है चाहे उनके राईट्स और ज़िम्मेदारियाँ एक जैसी न ही हों। इस्लाम की नज़र में मर्द और औरत दोनों इन्सान हैं, साथ ही ह्युमन राईट्स में बराबर के हिस्से दार भी हैं।

इस्लाम में बहस की बात यह है कि औरत और मर्द सिर्फ़ इस बिना पर कि एक औरत है और दूसरा मर्द, बहुत से पहलुओं से एक दूसरे के जैसे नहीं हैं। दुनिया उनके लिए एक जैसी नहीं है। नेचर और ख़िलक़त ने इनको एक जैसा नहीं माना है।

यूरोप का मानना है कि औरत और मर्द क़ानून, राईट्स और ज़िम्मेदारियों के लिहाज़ से भी एक ही जैसे हैं। यानी औरत के लिए क़ानून भी मर्द ही के जैसा होना चाहिए और उसकी ज़िम्मेदारियाँ भी मर्द ही के जैसी होना चाहिएं। यूरोप औरत और मर्द के नेचरल डिफ़रेंसेज़ को अन्देखा कर देता है। इस्लाम और वेस्टर्न सिस्टम में यहीं से इख़्तेलाफ़ शुरु होता है। इसीलिए आजकल इस्लामी क़ानून को मानने वाले और वेस्टर्न सिस्टम के तरफ़दार "औरत और मर्द के लिए एक ही जैसे क़ानून" पर बहस कर रहे हैं न कि "औरत और मर्द के लिए बराबरी वाले क़ानून" पर क्योंकि औरत के लिए मर्द के बराबर के राईट्स और क़ानून को तो सभी मानते हैं और इस्लाम तो शुरु ही से इसको मानता है। इख़्तेलाफ़ इसमें है कि औरत के लिए भी मर्द ही के जैसे क़ानून और राईट्स होना चाहिएं। 'राईट्स और क़ानून में बराबरी' तो वह लेबल है जिसको पश्चिम की अंधी तक़लीद करने वालों ने 'एक ही जैसे राईट्स और क़ानून' पर पब्लिक को धोका देने के लिए चिपका दिया है।

मैंने हमेशा इस जाली लेबल के इस्तेमाल से परहेज़ किया है। मैंने कभी औरत और मर्द के क़ानूनों और राईट्स की बराबरी को औरत और मर्द के लिए एक जैसे क़ानून का नाम नहीं दिया।

मैं यह नहीं कहता कि दुनिया में औरत और मर्द के हुक़ूक़ और राईट्स में बराबरी का लिहाज़ रखा गया है और सिर्फ़ सिमिलॉरिटी को ही नज़रअंदाज किया गया है। नहीं! ऐसा नहीं है। बीसवीं सदी से पहले के यूरोप पर नज़र डालिए...

बीसवीं सदी से पहले वहाँ की औरत क़ानूनी और अमली तौर पर ह्युमन राईट्स से महरूम थी, न उसे मर्द के बराबर राईट्स मिले थे और न मर्द के जैसे। एक जल्दबाज़ इंक़ेलाब (जो एक सदी से कम में पैदा हुआ) जिसका नारा 'औरत और औरत

के लिए' था, यह इंक़ेलाब यूरोप में उठा और इसने औरत को मर्द के ही जैसे राईट्स दे दिए लेकिन औरत के नेचर, उसके जिस्म और उसकी साइकॉलोजी के हिसाब से अगर देखा जाए तो उसे कभी भी मर्द के बराबर राईट्स नहीं मिल सके।

यहाँ पर बराबरी और सिमिलॉरिटी के बीच के फ़र्क़ को समझना बहुत ज़रूरी है क्योंकि बार-बार यह कहा जा रहा है कि इस्लाम औरत को मर्द के बराबर राईट्स रखने और मर्द के बराबर क़ानून बनाने का क़ाएल है मगर औरत के लिए मर्द के जैसे क़ानून और राईट्स ही हों यह ज़रूरी नहीं है। इसको हम इस तरह समझ सकते हैं कि एक शख़्स के चार बेटे हैं और वह अपनी प्रापर्टी को सब में बराबर बाँटना चाहता है तो क्या वह एक बेटे को अपनी कोठी, दूसरे को फैक्ट्री, तीसरे को खेत और चौथे को कैश दे सकता है? अगर सबकी मार्केट वैल्यू एक ही जैसी हो तो क्या यह कहा जा सकता है कि उसने बराबरी से काम नहीं लिया। एक को तो कोठी दे दी और बाक़ी तीन के सर से छत छीन ली या एक को तो फैक्ट्री दे दी और बाक़ी तीन से उनकी रोज़ी का ज़रिया छीन लिया। नहीं! बिल्कुल नहीं! क्योंकि बाप ने अपने बेटों को सलाहियत के हिसाब से सबको बराबरी से अपनी प्रापर्टी में से हिस्से दे दिए हैं। यहाँ अगर उसने किसी चीज़ को नज़र अंदाज़ किया है तो वह सिमिलॉरिटी (यानी एक ही जैसी चीज़ देना) यानी चारों को फैक्ट्री नहीं दी है और न चारों को घर दिया है। यही फ़र्क़ औरत और मर्द के बीच बराबरी का भी है। औरत का हक़ मर्द के बराबर ज़रूर है मगर दोनों के जिस्म, नेचर और साईकालोजी में फ़र्क़ की वजह से एक जैसा नहीं है।

अगर औरत मर्द के बराबर राईट्स पाना चाहती है, अगर उसे मर्द की ख़ुशनसीबी जैसी ख़ुशनसीबी की आरज़ू है तो इसका सिर्फ़ एक रास्ता है और वह है एक ही जैसे राईट्स की डिमांड न करके एक दूसरे के बराबर राईट्स और क़ानून की डिमांड करना। मर्द के राईट्स मर्द के जिस्म, नेचर और साईकॉलोजी के हिसाब से और औरत के राईट्स और क़ानून उसके जिस्म व साईकॉलोजी के हिसाब से। औरत को चाहिए कि अपने जिस्म, साइकॉलोजी और नेचर की ख़ुद स्टडी करे और फिर ख़ुद अपने लिए अपने जैसे क़ानून और राईट्स की डिमांड करे, न कि मर्द के राईट्स को अपने ऊपर थोप ले और नतीजे में उसे सिर्फ़ परेशानियाँ ही परेशानियाँ मिलें।

सिर्फ़ एक रास्ता यह है कि मर्द और औरत में सच्चा ख़ुलूस और युनिटी पैदा हो तो औरत मर्द के बराबर बल्कि उस से बेहतर ख़ुशनसीबी हासिल कर सकती है। उधर मर्द भी सच्चे दिल से किसी ग़फ़लत और सुस्ती के बग़ैर और धोखा-धड़ी से बचकर औरतों को अपने बराबर बल्कि बेहतर राईट्स देने को तैयार हो जाएं। ●

आपके लैटर्स

एडीटर साहब आदाब!

जनवरी 2012 के इशू में सै. आले हाशिम रिज़वी का आर्टिकिल 'कोई रिसर्च आख़िरी नहीं' बहुत बहतरीन था। उनका साल 2012 का केल्कुलेशन भी बहुत पसंद आया।

अल्लाह उनकी तौफ़ीक़ात में इज़ाफ़ा करे!

आपकी मैगज़ीन 'मरयम' वाक़ई लाजवाब है।

सै. मोहम्मद हैदर रिज़वी
लखनऊ युनिवर्सिटी, लखनऊ

एडीटर साहब!
सलामुन अलैकुम

मैं अब्बास आब्दी, नौगावां सादात से हूं।
माशाअल्लाह आपकी मैगज़ीन बहुत अच्छी है।
आज के माहौल में ऐसी मैगज़ीन निकालना बहुत ज़रूरी है।

अब्बास आब्दी
नौगावां सादात
जे. पी. नगर

एडीटर साहब!
अस्सलामो अलैकुम

आप लोग वाक़ई बहुत ज़बरदस्त काम कर रहे हैं जो इतनी उम्दा मैगज़ीन निकाल रहे हैं। हिन्दुस्तान में ऐसी मैगज़ीन की बहुत दिनों से ज़रूरत थी।

ख़ुदा करे कि यह मैगज़ीन हमेशा अच्छे से अच्छे अंदाज़ में ऐसे ही निकलती रहे!

हुमा ज़हरा
चेन्नई

EARTHQUAKE

डर की रात

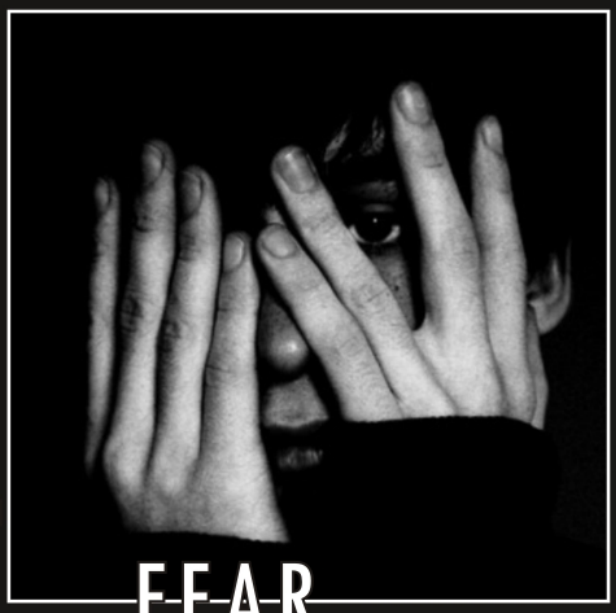

■ बतूल अज़रा फ़ातिमा

2 January, 2012 की रात से लेकर सुबह तक पूरा यू.पी. बल्कि हिन्दुस्तान का एक बड़ा हिस्सा डरा हुआ और सहमा हुआ था। हुआ यह कि सब लोग कड़कड़ाती हुई उस रात में अपने-अपने घरों में आराम से सो रहे थे कि अचानक रात में तीन बजे के क़रीब मोबाइल फ़ोन की घंटियां बजना शुरु हो गईं। हर तरफ़ बस एक ही ख़बर गश्त कर रही थी कि ज़लज़ला आने वाला है। एक के बाद एक करके यह ख़बर जंगल की आग की तरह फैलती चली गई... ''ज़लज़ला आने वाला है, दुनिया तबाह और बर्बाद होने वाली है, जो सो गया वह पत्थर का हो जाएगा।'' कहीं ज़लज़ले का ख़ौफ़ था तो कहीं पत्थर बनने का ख़तरा। मस्जिदों में, मंदिरों में दुआएं होने लगीं। कोहरे की ठंडी रातों में लोगों ने बिस्तर छोड़कर किसी पनाह की तलाश में भागना शुरु कर दिया। माएं अपने बच्चों को झिंझोड़-झिंझोड़ कर घर से बाहर की तरफ़ खींच कर लिए जा रहीं थीं, सबकी सांसें ठहरी हुईं थीं कि कब क्या हो जाए, किसे मौत आ जाए और कौन ज़िंदा रहे। सभी ने उस वक़्त मौत को बहुत क़रीब से देखा था और हर कोई खुदा को पुकार रहा था। किसी के दिल में इस सनसनाहट भरे माहौल से राहत पाने की दुआ थी तो किसी का दिल खुदा के ख़ौफ़ से गिड़-गिड़ा रहा था। कोई जान बचने की दुआ कर रहा था तो कोई रो-रो कर तौबा कर रहा था। कोहरे की ठिठुरती हुई रातों में और खुले मैदान में ठंडी हवाओं के साथ कोई ख़ौफ़ के सामने तो कोई खुदाई ताक़त के सामने हाथ जोड़े खड़ा था।

मगर इस वाक़ए ने सबके सामने एक बहुत बड़ा सवाल लाकर खड़ा कर दिया? अरे! सबकी बात छोड़िए! हम अपनी बात करते हैं। आख़िर उस डरावने और कशमकश के आलम में हमने क्या किया? हमारी क्या ड्यूटी थी ? सूरज ग्रहन, चांद ग्रहन, तेज़ बारिश, आंधी-तूफ़ान या ज़मीन का दहलना वग़ैरा...यह सब खुदा की निशानियां हैं। ऐसे हालात में ख़ौफ़ज़दा हो जाना नेचुरल है। इन निशानियों के ज़ाहिर होने पर खुदा को मानने वाले और न मानने वाले सभी पर, सभी पर खुदा का डर पूरी हैबत और शिद्दत के साथ छा जाता है।

ज़मीन लरज़ती है तो इंसान को अपनी हस्ती की हक़ीक़त मालूम होती है, उस वक़्त हर आदमी बेबसी से हाथ-पांव मारता है, मदद के लिए पुकारता है। इस्तग़फ़ार व तौबा के साथ बार-बार खुदा की तरफ़ लौ लगाता है। हर इन्सान उसके असर को खुद महसूस करता है, किसी अख़बारी लेंग्वेज के ज़रिए नहीं सोचता बल्कि खुद यक़ीन के साथ देखकर हैरान व परेशान हो जाता है जिसमें ख़ौफ़ और दहशत पूरी तरह झलकती है। अगर खुलासा किया जाए तो कुछ लोगों को इस वाक़ए की 'दहशत' होती है तो कुछ को खुदा की 'हैबत'।

सच यह है कि यह निशानियां समझदारों के लिए खुदा की तरफ़ से नेमत हैं। डर क्या चीज़ है, एक लम्हे के लिए अंदाज़ा हो जाता है। उस लम्हे हमारे दिल में जो डर पैदा होता है अगर उसमें खुदा को शामिल कर लिया जाए तो यह खुदा की ताज़ीम व मोहब्बत की वजह भी बन सकता है।

अल्लाह वालों के ख़ौफ़ में सिर्फ़ और सिर्फ़ खुदा का डर होता है और उसी ख़ौफ़ में उनकी ज़िंदगी की कामयाबी छुपी हुई होती है। एक जाहिल के ख़ौफ़ में सिर्फ़ थोड़ी देर की दहशत के अलावा और कुछ नहीं होता।

बस यही फ़र्क़ है एक जाहिल के ख़ौफ़ में और तौहीद वालों के ख़ौफ़ में। जो इसे नेमत समझकर अपनी ज़िंदगी में चेंज लाने की कोशिश करता है, वही सच्चा मुसलमान है।

हमने 2 जनवरी वाले वाक़ए में क्या किया? यही न कि हम भी दूसरों की तरह अपने घरों से बाहर निकल कर हर तरफ़ हैरान-परेशान देख रहे थे जबकि हमारा फ़र्ज़ था कि अगर ऐसा कुछ था भी तो अपने पालने वाले पाक परवरदिगार को याद करते! लेकिन हम भी दूसरों के रंग में रंग गए थे।

हमारे लिए ज़रुरी है कि इस 'ख़ौफ़' को सही से जान लें और ख़ौफ़ के साथ इलाही ख़ौफ़ को शामिल कर लें। नेचुरल ख़ौफ़ पर कोई अज्र नहीं मगर इलाही ख़ौफ़ में गुज़रा हुआ एक लम्हा भी हो सकता है कि बरसों की इबादत से बेहतर हो क्योंकि 'ख़ौफ़े खुदा' में की गई इबादत एक बहतरीन इबादत है। इसीलिए इन मौक़ों पर इबादत वाजिब हो जाती है और इस नमाज़ का नाम नमाज़े आयात है। लेकिन नमाज़े आयात उन मौक़ों पर वाजिब होती है जब ज़लज़ला या चांद ग्रहण वग़ैरा साबित हो जाए। वरना इन हालात में अहलेबैत के मानने वाले दूसरों की तरह इधर-उधर दौड़ने-भागने के बजाए दुआएं पढ़ते हैं और अपने खुदा से लौ लगाते हैं। ●

EARTHQUAKE

तवक्कुल

ख़ुदा पर भरोसा

अल्लाह तआला से ताल्लुक़ की बुनियाद उसकी तौहीद पर ईमान लाने के बाद ही शुरू हो जाती है लेकिन आम ज़िंदगी में अक्सर ऐसा होता है कि मुश्किलें पैदा होती हैं और क़दम-क़दम पर यह ईमान डगमगाता है ख़ास तौर से उस वक़्त जब हालात अच्छे न हों और नाख़ुशगवार हों। ऐसे हालात का मुक़ाबला करने के लिए अल्लाह पर भरोसा, उस पर तवक्कुल और उसकी क़ज़ा पर राज़ी रहना ज़रूरी हो जाता है। अगर ऐसा हो गया तो ईमान मज़बूत हो जाता है और अगर तवक्कुल न किया जाए तो ईमान में कमज़ोरी और फिर आख़िर में इसके बिल्कुल ही ख़त्म होने का डर पैदा हो जाता है।

तवक्कुल का मतलब

तवक्कुल के मायने भरोसा करने के हैं। भरोसा क्या है? इसे यूँ समझिए कि एक शख़्स सुबह से शाम तक एक ऑफ़िस में काम करता है क्योंकि उसे भरोसा है कि वह ऑफ़िस महीने के आख़िर में उसे तंख़्वाह अदा करेगा या एक शख़्स पेनाडोल पर भरोसा करते हुए उसे खाता है ताकि उसका सर दर्द दूर हो जाए वग़ैरा, इसी को भरोसा कहते हैं। इस्लाम में तवक्कुल का मतलब अल्लाह पर भरोसा करना, अपनी हर ज़रूरत व ख़्वाहिश के लिए उसकी तरफ़ देखना, अपने कामों में उसी से मदद माँगना और उसी को अपना वकील बनाकर मामला उसके हवाले कर देना है।

तवक्कुल की ज़रूरत

एक सवाल यह पैदा होता है कि जब दुनिया के तमाम या ज़्यादातर काम किसी न किसी वजह के तहेत हो रहे हैं तो फिर अल्लाह पर तवक्कुल की क्या ज़रूरत है? या क्या तवक्कुल सिर्फ़ उन कामों में किया जा सकता है जिनमें इंसान कुछ नहीं कर सकता? इन सवालों का जवाब यह है:-

ग़ैर इख़्तियारी मामलों में अल्लाह पर तवक्कुल

ग़ैर इख़्तियारी कामों से मुराद वह मामले हैं जो इंसानी कंट्रोल से बाहर हैं और उनमें कोई कुछ नहीं कर सकता। तवक्कुल की पहली हालत तो यह है कि इन मामलों में अल्लाह पर भरोसा किया जाए जो इंसान के कंट्रोल में नहीं हैं जैसे एक शख़्स घर से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने निकलता है। इस बात के चांसेज़ हैं कि रास्ते में कोई चोर लुटेरा उसे नुक़सान पहुंचा दे। इस सिलसिले में वह अल्लाह पर भरोसा रखता है कि अल्लाह उसे किसी भी नुक़सान से बचाए रखेगा या एक शख़्स खुले आसमान के नीचे बारिश में भीगता हुआ घर जा रहा है इस भरोसे के साथ कि अल्लाह उसे आसमानी बिजली से बचाएगा।

इख़्तियारी मामलों में अल्लाह पर तवक्कुल

तवक्कुल के बारे में जो कुछ ऊपर कहा गया है उस पर तो न कोई ऐतराज़ हो सकता है और न उसे समझना मुश्किल है। लेकिन वह काम जो इंसान के कंट्रोल में हैं उन पर तवक्कुल करने का तरीक़ा और ज़रूरत पर बात करना ज़रूरी है।

पहला सवाल यह है कि वह काम जो किसी हद तक इंसान के कंट्रोल में होते हैं उन पर तवक्कुल कैसे किया जाए? इसका सादा सा जवाब यह है कि इन कामों में इंसान के बस में जो कुछ वह कर सकता है उसकी कोशिश करे और फिर नतीजा अल्लाह पर छोड़ दे। जैसे एग्ज़ाम्स में कामयाबी के लिए एक बच्चा पूरे साल क्लासें लेता और अपना होमवर्क करता है। फिर एग्ज़ाम्स भी देता है और उसका नतीजा अल्लाह पर छोड़ देता है। यानी तवक्कुल यह नहीं कि ख़ुद के करने का काम भी अल्लाह पर डाल दे और फिर नतीजे का इंतिज़ार करे।

लेकिन इस के साथ ही एक दूसरा सवाल पैदा होता है कि जब स्टूडेंट ने ख़ुद ही सारी मेहनत कर ली तो फिर अल्लाह की मदद का क्या फ़ाएदा है? वह तो वैसे ही अपनी मेहनत के बल-बूते पर पास हो जाएगा तो फिर तवक्कुल कैसा? इस सवाल का जवाब यह है कि स्टूडेंट का इम्तिहान में पास होना महेज़ मेहनत करने पर ही बेस नहीं करता है। इसके अलावा भी कई दूसरी चीज़ें हैं जिनके न होने की वजह से उसे नाकामी मिल सकती है। मिसाल के तौर पर यह मुमकिन है कि वह एग्ज़ाम हाल में सारा याद किया हुआ भूल जाए या उसकी तबीअत ख़राब हो जाए और वह पेपर ही न दे सके, या उसकी कापी खो जाए, या चेक करने वाला कोई ग़लती कर बैठे वग़ैरा। अगर ग़ौर करें

तो मेहनत कामयाबी के फ़ैक्टर्स में से एक फ़ैक्टर है जिसकी अहमियत अपनी जगह है लेकिन कोई भी दूसरा फ़ैक्टर उसकी जड़ काट सकता है। इसलिए एक मोमिन अपने हिस्से का काम करने के बाद नतीजे के लिए अल्लाह पर भरोसा करता है, उसी से मदद मांगता है और उसी की तरफ़ देखता है क्योंकि यह अल्लाह ही है जो तमाम फ़ैक्टर्स को जानता है, उन्हें समझता है और उनको कंट्रोल करने की क़ुदरत रखता है।

तफ़वीज़ व रज़ा

तवक्कुल जैसा कि ऊपर बताया गया कि तमाम पॉसिबिल फ़ैक्टर्स और तदबीरों व कोशिशों को करने के बाद अल्लाह पर भरोसा करना ताकि कामयाबी या जो रिज़ल्ट चाहे वह मिल जाए। लेकिन क्या हमेशा ही कामयाबी मिलती है? नहीं! बल्कि तवक्कुल करने के बावजूद कभी नाकामी होती है और कभी कामयाबी। यहां से तफ़वीज़ शुरू होती है जिसका मतलब है कि इस नाकामी को तसलीम करते हुए ख़ुद को या अपने मामले को ख़ुदा को सौंप देना और ख़ुदा की क़ज़ा यानी फ़ैसले पर ऐतराज़ न करना। मिसाल के तौर पर एक बच्चे की तबीयत ख़राब है। उसका बाप उसे अस्पताल ले जाता है, डाक्टर को दिखाता है और इलाज कराने में कोई कसर नहीं छोड़ता। लेकिन कुछ दिनों के बाद उसका बच्चा मर जाता है। अब उसे ख़ुदा के फ़ैसले को तसलीम कर लेना, उस पर राज़ी हो जाना और अपनी ख़्वाहिश को ख़ुदा के हुक्म के आगे झुका देना है। इसका मतलब यह नहीं कि औलाद की मौत पर उसे दुख ही न हो, ऐसा होना इन्सानी नेचर के ख़िलाफ़ है। तफ़वीज़ व रज़ा का मतलब जान-बूझकर अल्लाह से शिकायत और बुरा-भला कहने से बचना है।

तफ़वीज़ व रज़ा की ज़रूरत

तफ़वीज़ व रज़ा क्यों ज़रूरी है? या नाकामी की हालत में ख़ुदा की मर्ज़ी पर क्यों राज़ी रहा जाए? क्योंकि वही कामिल इल्म रखता है, वही हर चीज़ को जानता है और वही कायनात की मसलहतें समझता है। जिस तरह एक भरोसे के लाएक़ सर्जन के सामने एक मरीज़ ख़ुद को सुपुर्द कर देता है कि सर्जन जो चाहे करे, जितनी चाहे तकलीफ़ दे लेकिन जब दिल के आप्रेशन के लिए सर्जन पर भरोसा कर लिया तो फिर तकलीफ़ की ज़्यादती पर उस डाक्टर को बुरा-भला कहना, उससे झगड़ना और उसके इलाज के तरीक़े पर उंगली उठाना ग़लत और ख़ुद को हलाकत में डालने के बराबर है। अपना बदन सर्जन के कंट्रोल में दे देना यूँ तो एक तकलीफ़देह चीज़ है लेकिन हक़ीक़त में नई ज़िंदगी का पैग़ाम है। हज़रत मूसा और हज़रत ख़िज़्र[अ०] के वाक़ेए में यही सबक़ दिया गया है कि कश्ती का टूट जाना और औलाद का मर जाना देखने में एक साफ़ नुक़सान है लेकिन चूंकि कश्ती को ज़ालिम बादशाह के क़ब्ज़े में जाने से बचाना था इसलिए उसे तोड़ा गया। जबकि लड़के के क़त्ल का मक़सद मां-बाप को एक बेहतर औलाद देना और उनकी आख़िरत के लिए रास्ता साफ़ करना था इसलिए अल्लाह के हर हुक्म पर तफ़वीज़ व रज़ा ज़रूरी है क्योंकि उसका फ़ैसला ही आख़िरी फ़ैसला और हक़ है।

तवक्कुल व तफ़वीज़ पर अमल

सवाल यह है कि तवक्कुल कैसे किया जाए? इसे इस तरह समझिए:

1- जब आप किसी काम को करने के बारे में सोचें या किसी मामले में फंस जाएं तो यह देखें कि यह मामला आपके कंट्रोल में है या नहीं। अगर यह आपके कंट्रोल से बाहर है यानी उसमें कोशिश की ही नहीं जा सकती तो शुरू ही में अल्लाह पर तवक्कुल कर लीजिए और दुआ कीजिए कि अल्लाह आपकी मुराद पूरी कर दे।

2- अगर मामला कोशिश और तदबीर का है तब भी अल्लाह का नाम लेकर कोशिश शुरू कर दीजिए और फिर अल्लाह पर भरोसा कीजिए।

3- नतीजा आने तक दुआ व भरोसा जारी रखें लेकिन बहुत ज़्यादा इस मामले पर टेंशन न लें क्योंकि यह तवक्कुल के उसूल के ख़िलाफ़ है।

4- यह यक़ीन रखें कि नतीजा जो भी हो, ख़ुदा के फ़ैसले पर राज़ी रहना है यानी हर सूरत में ख़ुद को अल्लाह के हवाले कर दें।

5- नतीजा अगर आपके मुताबिक़ हो तो अल्लाह का शुक्र करें।

6- नतीजा आपकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ होने की सूरत में ख़ुदा के फ़ैसले पर राज़ी रहिए और बेसब्री, तनक़ीद, बुरा-भला कहने से बचें।

7- साथ ही यह कि शैतान के वसवसों से होशियार रहें क्योंकि वह आपको अल्लाह से बदगुमान करने की कोशिश करेगा।

8- अगर मुमकिन हो तो आगे के लिए सोच-समझकर एक प्रोग्राम बनाएं और फिर एक नए भरोसे के साथ सफ़र का आग़ाज़ करें।

मिसालः- "मैं आज सुबह जब घर से ऑफ़िस के लिए निकला तो देखा कि गाड़ी का टायर पंचर है। मैंने सोचा कि क्या कोई कोशिश की जा सकती है तो जवाब मिला कि स्टफ़नी लगाई जा सकती है। 20 मिनट इसमें बर्बाद हो गए। फिर ऑफ़िस के लिए सफ़र शुरू किया इस भरोसे के साथ कि अल्लाह वक़्त पर आफ़िस पहुँचा कर आफ़िसर्स के इताब से बचा लेगा। रास्ते भर दुआ करता रहा। लेकिन जब आफ़िस पहुंचा तो रजिस्टर पर ग़ैर-हाज़िरी लग चुकी थी। बॉस ने तलब किया, मैंने मुश्किल बताई मगर बॉस ने क़ुबूल नहीं किया और मुझे रिटेन वार्निंग दे दी। अब तफ़वीज़ व रज़ा है कि यह उसका फ़ैसला है। इस वार्निंग पर दिल दुखना नेचरल है लेकिन इस पर अल्लाह से शिकायत नहीं करना है कि हो सकता है इसमें कोई ख़ैर, कोई मसलेहत, कोई आज़माईश वग़ैरा की हिकमत छुपी हो।

तवक्कुल व तफ़वीज़ के बारे में कुछ ख़ास बातें

1- अगर कोशिश करने का मामला हो तो कोशिश किए बग़ैर अल्लाह से काम हो जाने की उम्मीद रखना तवक्कुल नहीं है।

2- अगर मामला कोशिश से बाहर का है तो कोशिश करना तवक्कुल के ख़िलाफ़ है।

3- तवक्कुल का दावा करने के बाद बेचैनी और टेंशन का हद से ज़्यादा होना भी तवक्कुल के ख़िलाफ़ है।

4- उलटा नतीजा निकलने की वजह कुछ वक़्तों में कोशिश या समझ की कमी भी होती है इसलिए ऐसे नतीजे को ख़ुदा की तरफ़ मंसूब करना तफ़वीज़ नहीं है।

5- नतीजा उलटा होने की सूरत में मामले पर ऐतराज़ न करना तफ़वीज़ और रज़ा है।

6- तफ़वीज़ व रज़ा, सब्र ही की एक क़िस्म है। ●

मोमिन

■ राज़िया रिज़वी

आम तौर पर हमारे ज़ेहन में मोमिन लफ़्ज़ सुनते ही नमाज़ी, रोज़दार, हाजी की शख़सियत सामने आ जाती है लेकिन एक सच्चे मोमिन में इन ख़सलतों के साथ-साथ खुदा व रसूल[स०] से मोहब्बत, सब्र, शुजाअत, इन्केसारी और विक़ार, ज़िम्मेदारी का एहसास, नफ़्स की पाकीज़गी, क़ानून का एहतेराम, हमदर्दी वग़ैरा का जज़्बा भी है तो वह ख़ुदा की नज़र के साथ-साथ समाज का भी बेहतरीन इन्सान बन जाता है।

1- इन्सानी हमदर्दी

मोमिन की हमदर्दी किसी ख़ास इन्सानी तबक़े में सिमटी हुई नहीं होती बल्कि इसका दायरा पूरा समाज होता है। उसके दिलो दिमाग़ में रंग, नस्ल, ज़बान के फ़र्क़ नहीं होते बल्कि वह इन सबसे बढ़कर सोचता है क्योंकि जिस ख़ुदा का बंदा वह है दूसरे इन्सान भी उसी ख़ुदा के बंदे हैं। इसलिए वह सबको अपने ही जैसा समझता है न कि अपने को अफ़ज़ल और दूसरों को कमतर। साथ ही सबके लिए उसमें हमदर्दी के जज़्बात होते हैं। रसूले ख़ुदा[स०] कहते हैं, ''अल्लाह उस शख़्स पर रहम नहीं करता जो दूसरों पर रहम नहीं करता''।

2- ख़ुदा की तमाम मख़लूक़ से मोहब्बत

मोमिन की यह हमदर्दी सिर्फ़ इन्सानों तक सिमटी नहीं होती बल्कि वह अल्लाह की सारी मख़लूक़ के साथ मोहब्बत और रहम का सुलूक करता है, उन्हें बेमक़सद जान से नहीं मारता, उन पर उतना बोझ लादता है जितना बोझ वह बर्दाश्त कर सकें और हर तरीक़े से उनका ख़याल रखता है। रसूले ख़ुदा फ़रमाते हैं, ''इन बे ज़बान जानवरों के बारे में अल्लाह से डरते रहो, जब वह तंदुरुस्त हों तो उन पर सवारी करो और कमज़ोर जानवरों से काम लेना छोड़ दो। हद यह है कि किसी जानवर को ज़बह करने के लिए भी हिदायत दी गई कि जब ज़बह करो तो अच्छे तरीक़े से ज़बह करो।''

3- सिला-ए-रहमी

मोमिन समाज के हर इन्सान से अच्छे ताल्लुक़ात रखता है ख़ास तौर से उन लोगों से जिनके साथ उसका ख़ून का रिश्ता है। अपने माँ-बाप और अज़ीज़ों के साथ अच्छा सुलूक करता है और उनकी ज़रूरत को अपनी हैसियत के लिहाज़ से पूरा करने की कोशिश करता है। क़ुरआन के अलफ़ाज़ में कि वह अपने अल्लाह की मोहब्बत में अपना पसंदीदा माल रिश्तेदारों और यतीमों, मिस्कीनों और ग़ुरबत ज़दा मुसाफ़िरों, सवाल करने वालों और ग़ुलामों की रिहाई पर ख़र्च करता है।

इस अमल में उसे इस बात का इन्तेज़ार नहीं होता कि कोई उस के साथ क्या रवैया रखता है? अगर वह अच्छा रवैया रखे तो वह भी अच्छे रवैये से पेश आए, वरना उस से उस तरह का बर्ताव करे जो वह उसके साथ करता है। मोमिन इस तरह हरगिज़ नहीं सोचता। इसलिए हमारे नबी[स०] फ़रमाते हैं, ''बराबरी का सुलूक करने वाला सिला-ए-रहमी करने वाला नहीं है बल्कि सिला-ए-रहमी तो यह है कि कोई तुम से क़ता रहमी करे तो भी तुम उसके साथ सिला-ए-रहमी करे''। मोमिन तो बदसुलूकी करने वाले से भी अच्छा सुलूक करता है।

रसूले ख़ुदा[स०] कहते हैं, ''तुम में से बेहतर वह है जो अख़लाक़ के लिहाज़ से बेहतर हो।''

4- मुसलमान भाइयों की ख़ैरख़्वाही

आम इन्सानों से हमदर्दी रखने के बावजूद मोमिन के जज़्बात और एहसासात अपने मुलसमान भाइयों के लिए ज़्यादा गहरे होते हैं और इस बात को मानते हुए कि जिस पर यह ईमान रखता है वह भी उसी हाकिम पर ईमान रखता है इसलिए यह उसकी हमदर्दी का ज़्यादा हक़दार है। रसूले इस्लाम[स०] फ़रमाते हैं, ''मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है न तो वह ख़ुद उस पर ज़्यादती करता है न किसी को उस पर ज़्यादती करने देता है। कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक वह अपने भाई के लिए वही पसंद न करे जो वह अपने लिए पसंद करे''।

5- अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुनकर

मोमिन हक़ को पामाल होते हुए नहीं देख सकता, जैसे कोई शख़्स अपने बाप को ज़लील होते देखना बर्दाश्त नहीं करता उसी तरह हक़ जो इस दुनिया में सबसे क़ीमती चीज़ है उसे भी पामाल होते देखना मोमिन के लिए मुमकिन नहीं है। मुसलमान का उसूल यह है कि वह जिस जगह हक़ को पामाल होते देखे तड़प जाए। रसूले इस्लाम[स०] फ़रमाते हैं, ''उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है तुम ज़रूर लोगों को नेकी का हुक्म देते रहो और बुराइयों से रोकते रहो, ज़ालिम का हाथ पकड़ो और ज़ालिम को हक़ पर झुकाओ और अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो तुम सबके दिल भी एक ही तरह के हो जाएंगे। फिर अल्लाह तुमको अपनी रहमत और हिदायत से दूर कर देगा''।

यह वह ख़ूबियाँ और अच्छाइयाँ हैं जो एक मोमिन में होना चाहिएं यह आर्टिकल पढ़कर हमें चाहिए कि अपना जायज़ा लें कि क्या हम इस तस्वीर के जैसे हैं? और अगर नहीं हैं तो इन ख़ूबियों को अपने अंदर पैदा करने की कोशिश करें और सच्चे मोमिन कहलाने के हक़दार बनें।